मासिक

ISSN 2394-8485

गुरमत ज्ञान

३/-

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही ५५५ फरवरी 2024 वर्ष १७ अंक ६

विशेषांक

जैतो के मोर्चे में शामिल होने जा रहे ५०० सिंघों के पहले शहीदी जत्थे की तसवीर

महाराजा रिपुदमन सिंघ

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही 555
वर्ष 17 अंक 6 फरवरी 2024

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
ओज एवं करुणा के सागर : श्री गुरु हरिराय साहिब 9
-डॉ.मनजीत कौर
नाभा रियासत और जैतो का मोर्चा : अवलोकनीय प्रसंग 12
- डॉ. चमकौर सिंघ
नाभा रियासत और अंग्रेज शासन 19
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
नाभा रियासत का इतिहास 32
-डॉ. गुरप्रीत सिंघ
जैतो के मोर्चे से संबंधित प्रस्ताव 36
-डॉ. रणजीत कौर पंनवां
दशमेश पिता की चरण-रज से पवित्र हुआ स्थान : जैतो 42
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
जैतो : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में 45
-स. बिकरमजीत सिंघ जीत
सिक्खों की सहिष्णुता व कुर्बानी की उम्दा मिसाल . . . 48
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
दुरजनु दूजा भाउ है ... 52
-डॉ. परमजीत कौर
खबरनामा 56

गुरबाणी विचार

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ।।
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ।।
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ।।
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ।।
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ।।
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ।।
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ।।
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ।।
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ।।
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ।।१३ ।। *(पन्ना १३६)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फाल्गुन मास के उपलक्ष्य में उच्चारण की गई इस पावन पउड़ी में इस मास की ऋतु तथा वातावरण एवं लोक-संस्कृति की पृष्ठभूमि में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम की सच्ची स्तुति गायन कर मनुष्य जीवन सफल करने का महामार्ग प्रदान करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि फाल्गुन मास में जब शीत ऋतु का अंत होने लगता है और लोग खुशियां मनाते नज़र आते हैं, उस समय सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों में प्रभु-मिलाप की इच्छा व उम्मीद पैदा होती है। संत अथवा गुरु जीव-स्त्रियों का प्रभु के साथ मिलाप का अपनी कृपामयी अगुआई से सबब बनाते हैं। उन जीव-स्त्रियों की जीवन रूपी रात सुखमय हो जाती है, दुखों का ग्रास नहीं बनती। सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों की इच्छा पूर्ण होती है और उनको प्रभु-पति मिल जाते हैं। वे अपनी सखियों के साथ प्रभु की उपमा के गीत गाती हैं और उन्हें प्रभु-पति के अतिरिक्त अन्य कोई नज़र नहीं आता। वे किसी दूसरे को अर्थात् सांसारिक ख्याल आदि को अपने मन-मस्तिष्क में जगह नहीं देती।

ऐसे में जीव-स्त्रियां अपना लोक और परलोक संवार लेती हैं। उनको सदीवी सुख-शांति की मानसिक-आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वे संसार रूपी सागर में डूबने से बच जाती हैं और पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़तीं अथवा जीवन-मुक्त हो जाती हैं। हम मनुष्य-मात्र को

चाहे एक ही जीभ मिली है परंतु प्रभु के अनेक गुण इस एक जीभ द्वारा ही गायन किए जा सकते हैं। इसके लिए हमें सतिगुरु की शरण में जाना होता है। फाल्गुन मास में हमको सदैव प्रभु की स्तुति करनी चाहिए, भले ही उसको अपनी स्तुति की जरा भी इच्छा नहीं है। यहां गहरी रमज़ है कि प्रभु की स्तुति करना हमारे अपने हित में है। यह हमारा कोई प्रभु के सिर एहसान नहीं है। प्रत्येक पल प्रभु की सच्ची स्तुति में लगाकर ही जीवन अर्थपूर्ण हो सकता है। समस्त मानव जीवन-रूपी फाल्गुन मास प्रभु-स्तुति के अनुकूल है।

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे।।
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे।।
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे।।
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे।।
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे।।
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे।।
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे।।
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे।।१४।।१।। *(पन्ना १३६)*

श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस अंतिम पउड़ी में प्रभु-नाम के महातम और पावन बाणी का मूल प्रयोजन दर्शाते हुए मनुष्य-मात्र को नाम-बाणी द्वारा प्रभु-नाम के साथ जुड़कर अमूल्य मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम का ध्यान किया उसी के ही उद्देश्यपूर्ण कार्य पूरे हुए; जिस-जिस ने पूर्ण गुरु के माध्यम से परमात्मा को याद किया वही रूहानी दरबार में सच्चा व खरा सिद्ध हुआ। सभी सुखों अथवा रूहानी सुखों के खजाने रूपी हरि-चरणों से जुड़कर भय के कठिन सागर से पार हुआ जा सकता है। नाम से जुड़ने वाले को प्रेम-भक्ति रूपी अमूल्य वस्तु मिल जाती है। वह माया रूपी विष को सहन् नहीं करता। लालच रूपी झूठ से वह छूट जाता है। उसकी अनिश्चितता खत्म हो जाती है और वह प्रभु-नाम रूपी सत्य से भरपूर हो जाता है। वह परमात्मा को सदैव मन-अंतर में टिकाकर रखता है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि है उसके सभी महीने, दिन, मुहूर्त अच्छे हैं अर्थात् परमात्मा की कृपा ही जीवन की सफलता का आधार है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा-दृष्टि करो और मुझे अपने दर्शन-दीदार प्रदान कर दो!

संपादकीय

शहीदों का संदेश

गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो के मोर्चे के समय सन् १९२४ में प्रथम शहीदी जत्थे द्वारा कौम के नाम पढ़े गए संदेश की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :

सुनो खालसा जी ! साडे कूच डेरे, असीं आख़िरी .फ़तह बुला चल्ले।
पाओ बीज ते सांभ के .फ़सल वड्ढो, असीं डोल्ह के रत्त पिआ चल्ले।
चोबदार दे वांग अवाज़ दे के, धौंसे कूच दे असीं वजा चल्ले।
तुसीं आपणी अक्ल दा कंम करना, असीं आपणी तोड़ निभा चल्ले।. . .

पूरी कविता बहुत लम्बी है। वास्तव में यह केवल एक कविता ही नहीं, बल्कि यह हमारे पुरखों की हमारे लिए संदेश रूप में प्रेरणा है। 'पाओ बीज' से तात्पर्य कौमी जज़्बे की तरफ इशारा है। कौमी जज़्बे द्वारा ही कौम चढ़दी कला में रह कर हर मुसीबत का सामना करने के योग्य बनती है और यदि कौम के वारिसों में कौमी जज़्बा ख़त्म हो जाये तो कौम पतनोन्मुख की तरफ चली जाती है। यह जज़्बा माँग करता है कि यदि कौम का सदा अस्तित्व बरकरार रखने के लिए निजी अस्तित्व कुर्बान भी करना पड़े तो भी संकोच नहीं करना। हम अरदास में रोज़ाना पढ़ते हैं-- ''जिन्हां सिंघां सिंघणियां ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटाए, खोपड़ियाँ लुहाइआं, चरखड़ियाँ ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए, गुरुद्वारिआं दी सेवा लई कुर्बानियां कीतियां . . .।'' ये सभी वही थे जिन्होंने धर्म-कौम को सदा चढ़दी कला में रखने वाले जज़्बे के कारण शहादत देकर अपने निजी वजूद को कुर्बान कर दिया। धर्म-कौम की सेवा के लिए, हृदय में जज़्बे का बीज अंकुरित करने के लिए अमृत-वेला संभालना, नित्तनेम, सेवा-सिमरन वाले आचरण की ज़रूरत होती है। अरदास में जिन धर्मियों का ज़िक्र आया है और साकों, मोर्चों, घल्लूघारों की दास्तान को जिन्होंने सृजित किया है, ये वही सभी बंदगी वाली रूहें थीं, जो 'पंथ वस्से मैं उज्जड़ां' तथा 'सिर जावे तां जावे मेरा सिक्खी सिदक न जावे' वाले पंथक जज़्बे की धारक थीं। इसी जज़्बे द्वारा हमारे पुरखों ने गुरमति सिद्धांतों पर पहरा देते हुए गुरबाणी के सम्मान और गुरुधामों की पवित्रता की ख़ातिर ज़ालिम हुकूमतों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए साकों, मोर्चों, घल्लूघारों की लम्बी दास्तान को सृजित किया है। आज समूचा सिक्ख जगत इसी दास्तान के अहम भाग गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो के मोर्चे की प्रथम शताब्दी मना रहा है।

गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो का मोर्चा हमारे पुरखों के पंथक जज़्बे की अतुल मिसाल है। इसी पंथक जज़्बे द्वारा ही ज़िंदादिल बहन बलबीर कौर अपनी गोद में उठाए बच्चे को गोली लगने से

शहीद हो जाने पर उसे धरती पर रख कर खुद शहीद होने के लिए आगे बढ़ जाती है। इसी पंथक जज़्बे द्वारा ही एक बुज़ुर्ग माता अपने एक पुत्र के शहीद हो जाने के बाद दूसरे पुत्र के गले में माला पहन कर (पुत्र को गले लगाकर) शहीद होने के लिए चल पड़ती है और अरदास करती है कि मैं अपने अहो-भाग्य समझूँगी, यदि मेरे दोनों पुत्र पंथ के लिए शहादत प्राप्त कर जाएं। ऐसा जज़्बा स्वाभिमानी और जुझारू कौम की गवाही भरते हैं कि जिस किसी ने भी ईर्ष्यावश होकर खालसा पंथ के साथ टकराना चाहा, उसे आखिर में झुकना ही पड़ा। यही पंथक जज़्बा आज पंथ-विरोधी ताकतों के लिए चुन्नौती बना हुआ है जो खालसा पंथ की चढ़दी कला से बौखला कर कई तरह के सिक्ख-पंथ विरोधी मंसूबे बना रही हैं। यदि हम लोग निजी स्वार्थ में उलझ कर रह जायेंगे तो पंथ-विरोधी ताकतें इसका लाभ उठा लेंगी और उठा भी रही हैं।

खालसा पंथ की सदा चढ़दी कला रहे, गुरमति का प्रचार-प्रसार हो, पंथक ध्वज हमेशा आन-बान-शान के साथ झूलता रहे, पंथक मर्यादा बरकरार रहे, सिक्खी स्वरूप बरकरार रहे, यह इसी जज़्बे रूपी बीज से तैयार हुई फ़सल है। इस फ़सल को हरा-भरा रखने के लिए हमारे पुरखों ने इसे अपने खून से सींचा है। इस पंथक जज़्बे में से बहे रक्त के साथ सिक्ख इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ भरा पड़ा है।

आज यदि सिक्ख समाज में उपरोक्त फ़सल मुरझाती नज़र आती है तो हमें अपने अंदरूनी पंथक जज़्बे की तरफ नज़र दौड़ानी होगी। यदि आज हम बाणी और बाणे से टूट कर सिक्खी स्वरूप से मुँह मोड़ रहे हैं तो इसका कारण कहीं न कहीं हमारे अंदर, हम परिवारों और नेताओं में स्वार्थ-भावना ने पंथ-परस्ती को अवश्य पछाड़ा है। हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि हम प्रत्येक स्तर पर पंथक हितों की बजाय निजी हितों को प्राथमिकता देते हैं। यह एक सच्चाई है।

हमें हमारे पुरखे यह भी बता गए थे कि ''आप अपनी अक्ल का काम करना, हम अपनी निभा चले।'' कौमी उन्नति के लिए पंथक एकता और प्यार ही हमारी बुद्धि होनी चाहिए। भाई गुरदास जी के वचन-- ''गुरसिख माँ पिउ वीर कुटंब सबाइआ'' के अनुसार खालसा पंथ का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे को सगे भाइयों की तरह एक ही परिवार का सदस्य समझे! खालसा पंथ की चढ़दी कला के सम्बंध में 'प्रेम सुमार्ग ग्रंथ' में बहुत ख़ूबसूरत विचार है -- ''जे कोई सिक्ख ख़ालसे दे होणगे, सो आपस में प्यार करन अरु नेक बद (नेकी-बदी) नौं इकठ्ठे होइ जाण अरु जे इकस सिक्ख उप्पर (मुसीबत) आए बणे तां सब इकठ्ठे जीउ (जान) देणे नूँ तैयार होण, तब उन्हां सिक्खां नूँ सिक्खी दा फल होवे!''

हमारे पुरखों ने यदि इन शुभ विचारों को अपने जीवन में अपनाया हुआ था तभी वे अति कठिन समय में भी पंथ को चढ़दी कला में रखे रहे थे। यदि वे सभी पंथ को अपना परिवार समझते थे तभी घल्लूघारों के समय अपने शरीर पर हर वार झेल कर सारे कुटुंब की सुरक्षा करते रहे थे। इसीलिए यदि

हम पंथक एकता-इत्तफ़ाक के माध्यम से पंथक जज़्बे के धारक बनेंगे तभी पंथ-कौम की चढ़दी कला के लिए कुछ कर सकेंगे, नहीं तो 'हन्ने-हन्ने मीरी' कौमी जज़्बे और निश्चय को कमज़ोर कर देगी। हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम पंथक एकता-इत्तफ़ाक के धारक बन कर गुरु साहिबान के दिखाए मार्ग पर चलते हुए सिक्ख पंथ के प्रति अपनी बनती जिम्मेदारियां निभाते चलें। यह हकीकत है कि जब तक पंथक एकता और पंथक जज़्बा कायम रहेगा है तब तक पंथ फलता-फूलता रहेगा वरना पंथक एकता व पंथक जज़्बे की अनपस्थिति में पंथ डगमगाने लगेगा। 'बड़े घल्लूघारे' में बाईस जख्म खाकर घायल होने वाले महान जरनैल सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने कहीं यूं ही तो नहीं सिक्ख राज स्थापित कर लिया था। उनके नेतृत्व में पंथक नेताओं/सरदारों को सख़्त ताड़ना थी-- ''कोई ना करे किसै सरीका, कोई ना सुणावै दुख निज जीअ का।'' (स. रतन सिंघ भंगू) इन दो पंक्तियों में भी पंथक उन्नति का महान आदर्श छिपा हुआ है। यदि उस समय सिंघ निजी हितों, मुफादों और निजी दुखड़ों से ऊपर उठे हुए थे तभी वे पंजाब में सिक्ख-राज स्थापित करने के योग्य हुए थे और दिल्ली के लाल किले पर खालसई केसरी परचम लहराया था।

आज हमें अपने पुरखों के इस उच्च आदर्श से शिक्षा लेकर पंथक उन्नति के लिए अग्रसर होने की आवश्यकता है। कौम की चढ़दी कला और सर-बुलन्दियों के लिए नेताओं में कौमी जज़्बे का होना अति आवश्यक है, क्योंकि कौम की उन्नति के लिए साधारण मानव के मुकाबले नेताओं के पास सामर्थ्य और साधन ज्यादा होते हैं। हमने जैतो के मोर्चे से पंथ-परस्ती का जज़्बा लेना है। जैतो के मोर्चे से पंथक नेताओं ने यह उपदेश भी लेना है कि यदि सिक्ख-क्षेत्र पर शासन करना है तो पंथक सोच के धारक बनना पड़ेगा। पंथ-परस्ती की भावना रखने वाले धर्मी राजा के साथ मुश्किल समय में ख़ालसा पंथ कंधे के साथ कंधा जोड़ कर खड़ा हो जाता है, अपना आप कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाता है। आज जहाँ हमने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिला कर उन्हें बढ़िया रोज़गार प्राप्त करने के योग्य बनाना है, वहीं अपने बच्चों को धर्म की शिक्षा देकर उनके अंदर पंथक जज़्बा भी पैदा करना हमारा मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए। हम खुद बाणी और बाणे के धारक बनें तथा अपने बच्चों को गुरबाणी व अपने लासानी इतिहास के साथ जोड़ें! गुरबाणी के लड़ लगकर और अपने इतिहास से प्रेरणा लेकर ही हम पंथ-विरोधी ताकतों का सामना करने के योग्य बनेंगे।

— सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : ९९१४४-१९४८४

ओज एवं करुणा के सागर : श्री गुरु हरिराय साहिब

*-डॉ. मनजीत कौर**

हक परवर हक केश गुरू करता हरि राए।
सुलतान हम दरवेश गुरू करता हरि राए।।८७।।
फयाजुल दारैन गुरू करता हरि राए ।
सरवरि कौनैन गुरू करता हरि राए ।।८८ ।।

(भाई नंदलाल कृत गंजनामा)

अर्थात् श्री गुरु हरिराय साहिब सत्य के अनुयायी थे, सत्य के पालक सुलतान और दरवेश भी थे तथा दोनों जहाँ की रहमत करने वाले सरदार भी।

प्रकाश : श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म बाबा गुरदित्ता जी तथा माता निहाल कौर जी के घर माघ सुदी १३, संवत् १६८६ तद्नुसार १६ जनवरी, १६३० ई. को कीरतपुर साहिब (पंजाब) में हुआ। आप मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पोते थे। आपके जीवन में ओजस्विता एवं करुणा का सुन्दर सुमेल था, जिसके परिणामस्वरूप आप में शूरवीरता एवं परोपकार की भावना निरन्तर दृष्टिगत होती है।

शिक्षा : आपकी शिक्षा-दीक्षा दादा-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की देख-रेख में हुई। धार्मिक विद्या, घुड़सवारी, शस्त्राभ्यास के साथ-साथ आपको बहादुरी के अनेक करतब सिखाये गये।

विवाह एवं संतान : आप जी का विवाह श्री दयाराम जी की सुपुत्री बीबी किशन कौर जी के साथ हुआ। आपके घर दो सुपुत्र- रामराय तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने जन्म लिया।

कोमल एवं शांतचित्त : आप बहुत ही शांत एवं उदार प्रवृत्ति के थे। एक दिन आप बगीचे में टहल रहे थे कि अचानक आपका चोला (चोगा, पोशाक) एक पौधे से टकरा गया। फलस्वरूप एक सुन्दर पुष्प धरती पर गिर कर बिखर गया। वातावरण को सुरभित करते हुए पुष्प का यूं गिर जाना आपके कोमल हृदय को व्यथित कर जाता है। पुष्प के प्रति इतनी संवेदना देख कर आपके दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब आपके पास आये। सारा वृत्तांत जाना और फिर समझाया कि अगर चोला बड़ा पहनना है तो उत्तरदायित्व भी बड़े होते हैं, अर्थात् दूसरों के अधिकारों का सदैव ध्यान रखना चाहिए इस संसार रूपी उपवन में विचरण करते हुए। श्री गुरु हरिराय साहिब ने आजीवन दादा-गुरु के आदेश को समक्ष रखा और अपना दायित्व बाखूबी निभाया।

पर्यावरण संरक्षक : प्रकृति-प्रेमी गुरु जी ने पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक कार्य योजनाएं

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७६२५२३*

बनाईं। कीरतपुर साहिब में बागों का निर्माण करवाया तथा इसे बागों के शहर के रूप में परिवर्तित कर दिया। आपका पशु-पक्षियों के प्रति भी असीम प्रेम था। आपने एक चिड़ियाघर बनवाया, जहाँ बीमार एवं घायल पशु-पक्षियों का इलाज किया जाता था । वहाँ पशु-पक्षी स्वच्छन्दता से विचरण करते थे ।

प्राकृतिक औषधालय : श्री गुरु हरिराय साहिब ने एक ऐसा बाग लगाया जिसमें विविध प्रकार के औषधीय पौधे तथा वृक्ष लगाए गए। इसके अतिरिक्त पर्वतों की चोटियों एवं जंगलों की जड़ी-बूटियों से रोगियों का मुफ्त इलाज किया जाता। औषधालय (शफाखाना) में श्री गुरु हरिराय साहिब ने अनुभवी वैद्य-हकीमों की नियुक्ति कर रखी थी। गुरु जी स्वयं प्रतिदिन अपनी कृपा-दृष्टि एवं दुर्लभ औषधियां प्रदान करते और साथ ही मरीजों के खाने एवं रहने का नि:शुल्क प्रबंध किया जाता। इस संदर्भ में एक अन्य तथ्य उल्लेखनीय है कि शाहजहां का बेटा दारा शिकोह भयानक अजीर्ण रोग से ग्रस्त था और बड़े-बड़े वैद्य-हकीम भी उसका इलाज करने में असफल रहे। अन्तत: शाहजहां को श्री गुरु हरिराय साहिब के शफाखाने की खबर मिली और ज्ञात हुआ कि गुरु जी के पास हर मर्ज की दवा है। गुरु जी के औषधालय की दवा से दारा शिकोह शीघ्र ही पूर्णतया स्वस्थ हो गया और गुरु-घर का श्रद्धालु बन गया ।

गुरबाणी से अथाह प्रेम : श्री गुरु हरिराय साहिब गुरबाणी के प्रति अथाह प्रेम और अपार श्रद्धा रखते थे। अमृत बेला में प्रभु-सिमरन में तल्लीन हो जाते, शब्द-कीर्तन श्रवण करते और जिज्ञासुओं के प्रश्नों का बड़ा सटीक जवाब देकर उन्हें शांत करते। एक बार संगत अमृतमयी बाणी का कीर्तन करते हुए रात्रि के समय कीरतपुर साहिब पहुँची। गुरु साहिब विश्राम कर रहे थे। जैसे ही इलाही बाणी के मधुर शब्द आपने श्रवण किये आप तुरन्त उठे और तीव्रता के कारण पलंग से पैर टकरा जाने के कारण खून बहने लगा। संगत ने गुरु जी को आराम करने को कहा लेकिन श्री गुरु हरिराय साहिब गुरबाणी का अदब-सत्कार करते हुए संगत के साथ ही रहे ।

धर्म-प्रचारार्थ विविध आयाम : संगत और पंगत की मार्यादा को श्री गुरु हरिराय साहिब ने और दृढ़ करवाया। पंजाब के मालवा तथा दुआबा क्षेत्रों में प्रचार-दौरे किए तथा सिक्ख धर्म को प्रफुल्लित किया। धर्म प्रचार-कार्य की गति धीमी नहीं पड़ने दी। अनेक नए प्रचारक नियुक्त किए। भाई सुथरे शाह को दिल्ली तथा भाई फेरू को राजस्थान प्रचार हेतु भेजा ।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने जीवन-काल में कोई युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन फिर भी समय की नजाकत को समझते हुए अपने पास २२०० घुड़सवारों की फौज तैयार-बर-तैयार रखते थे।

धार्मिक उसूलों का दृढ़ता से पालन : गुरु-घर के विरोधी निरन्तर समय के बादशाह औरंगजेब के कान भर रहे थे कि सिक्खों के गुरु ने दारा शिकोह की मदद की है। (वास्तव में औरंगजेब

अपने बड़े भाई दारा शिकोह को अपने बादशाह बनने के मार्ग में बाधा समझाता हुआ उसे खत्म करवाना चाहता था।) साथ ही यह भी कहा कि उन्होंने अपने धर्म-ग्रंथ में इसलाम के खिलाफ लिखा है। इन तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु औरंगजेब ने गुरु जी को दिल्ली बुलावा भेजा, लेकिन गुरु जी उसकी कुटिल चालों को बाखूबी जानते थे, अतः उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमें औरंगजेब से कोई सरोकार नहीं। समय की नजाकत को भांपते हुए तथा संगत के अनुरोध पर अपने बड़े बेटे रामराय को यह समझाते हुए दिल्ली भेज दिया कि वहाँ जाकर कोई करामात नहीं दिखानी और न ही गुरु-घर की मर्यादा धूमिल होने देनी है। गुरु जी ने यह भी समझाया कि औरंगजेब के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर निर्भयतापूर्वक देना। गुरु जी से आशीर्वाद पाकर रामराय दिल्ली औरंगजेब के समक्ष पहुँचा। गुरु-पिता के आदेश को विस्मृत कर वहाँ औरंगजेब को प्रभावित करने हेतु अनेक करामातें दिखाईं। फलस्वरूप औरंगजेब प्रसन्न हो गया और उसने एक प्रश्न पूछा कि ''तुम्हारे धर्म-ग्रंथ में यह क्यों लिखा है- ''मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥'' यह हमारे धर्म की तौहीन है।'' इस पर अपने वर्चस्व को कायम रखने और समय के बादशाह को प्रसन्न करने हेतु रामराय सिक्ख धर्म की मर्यादा और पावन उसूलों को विस्मृत कर एक गुस्ताखी कर बैठा जो उसे बहुत मंहगी पड़ी। उसने बड़ी चालाकी से उत्तर दिया-- ''वास्तव में इस पंक्ति में-- 'मिटी मुसलमान की' नहीं, अपितु 'मिटी बेईमान की' है। यह सुन कर मुगल बादशाह औरंगजेब अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसने प्रशस्ति-पत्र के साथ-साथ दून घाटी का इलाका रामराय को जागीर के रूप में प्रदान किया।

जैसे ही श्री गुरु हरिराय साहिब को रामराय की इस गुस्ताखी का पता चला तो उन्होंने आजीवन अपने समक्ष न आने का रामराय को संदेश भिजवा दिया। यही नहीं, उन्होंने रामराय को हर प्रकार से अयोग्य जान कर अपने छोटे सुपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुआई सौंप दी।

इस प्रकार जीवन के प्रत्येक पल को सार्थक करते हुए १७ वर्ष गुरु-पद पर रहते हुए सिक्ख धर्म की जड़ों को मजबूती प्रदान की। लंगर के दौरान नगाड़ा बजाना, राजनीतिक प्रपंचों से बचते हुए एवं भावी संकटों से जागरूक करते हुए संगत को धार्मिक उसूलों पर अडिग रहने की हिदायत दी तथा सिक्खी प्रचार हेतु तीन केन्द्र भी स्थापित किए। कार्तिक वदी ९, संवत् १७१८ तद्नुसार ६ अक्तूबर, १६६१ ई. को परम ज्योति में विलीन हो गए।

नाभा रियासत और जैतो का मोर्चा : अवलोकनीय प्रसंग

*- डॉ. चमकौर सिंघ**

''नाभे नूँ ज़रूर जावांगा,
भावें सिर कट जावे मेरा।''

-१-

सिक्ख इतिहास में विभिन्न रियासतों से सम्बन्धित राजाओं-महाराजाओं, नवाबों, रजवाड़ों, चौधरियों आदि का ज़िक्र अक्सर ही पढ़ने-सुनने को मिलता है। इनमें से गुरु-घर के श्रद्धालु और विरोधी, दोनों प्रकार के शासकों का ज़िक्र आता है। इन राजाओं-महाराजाओं को 'बाबे के' और 'बाबर के' के वर्ग-विभाजन में विभाजित कर भी समझा जा सकता है। गुरु-काल और उसके बाद के ऐतिहासिक पृष्ठ पढ़ने पर पता चलता है कि अधिकांश सरकारी अहलकार और अधिकारी अक्सर सिक्खों के विरोध में ही सामने आए, परंतु इनमें से अल्प संख्या गुरु-घर के पक्ष में या श्रद्धालु के तौर पर सामने आती रही।

अठारहवीं सदी में सिक्ख मिसलों की स्थापना के समय जब विभिन्न क्षेत्रों का शासन- प्रबंध सिक्ख सरदारों के हाथ में आना शुरू हुआ तो कुछ सिक्ख सरदारों द्वारा भी राजा-महाराजा वाली पदवियों और शानो-शौकत को धारण करने का रुझान पैदा हो गया। पंजाब सहित उत्तरी-पश्चिमी भारत के अनेक इलाके, फूलकिया मिसल सहित १२ सिक्ख मिसलों के विभिन्न सरदारों के अधिकार-क्षेत्र में थे। इनमें से ११ मिसलें 'दल खालसा' का अंग थीं, जबकि फूलकिया मिसल दल खालसा से अलग कार्यरत रही। फूलकिया घराने के विभिन्न सरदारों ने कई रियासतें स्थापित कर लीं, जिनमें पटियाला, जींद, नाभा आदि प्रमुख थे। इतिहास गवाह है कि इन फूलकिया रियासतों की स्थापना छठे-सातवें गुरु साहिबान की कृपा द्वारा हुई है परंतु समय के साथ महाराजा रणजीत सिंघ के सरकार-ए-खालसा के मुकाबले, फूलकिया रियासतों का झुकाव अधिकांशत : अंग्रेज़ सत्ता के हक में रहा। इसके विपरीत, इन रियासतों में से नाभा रियासत के महाराजा रिपुदमन सिंघ का झुकाव पंथ के संघर्षी दलों और स्वतंत्रता संग्रामियों के साथ रहा और वे हमेशा अंग्रेज़ सत्ता के विरोध में तथा सिक्खों के हक में भुगते।

-२-

नाभा रियासत का सिक्ख प्रसंग : ऐतिहासिक पृष्टभूमि : नाभा, फूलकिया रियासतों में शामिल नाभा रियासत की राजधानी रहा है। राजा हमीर सिंघ ने १७५५ ई. में इसकी स्थापना कर इसे अपनी रियासत की राजधानी बनाया। पहले इसके दादा चौधरी गुरदित्त सिंघ ने बडरुक्खां कसबे को

**निदेशक, पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज़ इन सिक्खिज़म, बहादुरगढ़ (पटियाला)— १४७०२१, फोन : ८७२७०-७७७२५*

छोड़ कर नाभा नगर वाली जगह पर अपना निवास किया, जिसे 'चौधरी का घर' कहा जाता था। धीरे-धीरे नाभा का विकास होता रहा और पैपसू में शामिल होने तक यह रियासत की राजधानी रहा। इस नगर के नामकरण के बारे में एक परंपरा बहुत प्रसिद्ध है कि यह लाहौर और दिल्ली के मध्य (नाभि में) स्थित होने के कारण 'नाभा' नाम से प्रचलित हुआ। चौधरी गुरदित्त सिंघ फूलकिया वंश के पूर्वज बाबा फूल के पोते और चौधरी तिलोक सिंघ के बड़े पुत्र थे। चौधरी गुरदित्त सिंघ ने आस-पास के काफ़ी इलाकों पर कब्ज़ा कर कई गाँव आबाद किये। चौधरी गुरदित्त सिंघ का पुत्र सूरतिया सिंघ अपने पिता के जीते-जी परलोक गमन कर गया था। सन् १७५४ ई. में चौधरी गुरदित्त सिंघ का देहांत होने पर सूरतिया सिंघ का पुत्र हमीर सिंघ छोटे-से राज्य का मालिक बना। उसने १७५५ में नाभा शहर आबाद किया। उसने १७६३- ६४ ई. में अपने ख़ालसा भाइयों (दल ख़ालसा) के साथ मिल कर सरहिंद के सूबे जैन खान को हरा कर अमलोह का इलाका नाभा रियासत में मिला लिया। इसी तरह १७७६ ई. में रोड़ी के परगने को अपने अधिकार में ले लिया।

दिसंबर, १७८३ ई. में राजा हमीर सिंघ के देहांत के बाद इसका नाबालिग पुत्र राजा जसवंत सिंघ ८ वर्ष की आयु में नाभा रियासत की गद्दी पर बैठा। यह प्रजा का सेवक और धार्मिक वृत्ति वाला सिद्ध हुआ, जिसने अपनी माता, माई देसो और बुद्धिवान मंत्रियों की सलाह से अपने अंत (२२ मई, १८४० ईस्वी) तक राज-काज का इंतज़ाम अच्छी तरह संभाला। इसके बाद राजा देविंदर सिंघ गद्दी पर बैठा। सिक्खों के साथ अंग्रेज़ों की हुई पहली लड़ाई के समय, इसने लाहौर दरबार के प्रति हमदर्दी जताई। लड़ाई के बाद १८४६ ई. में इसे गद्दी से उतार कर ५० हज़ार की पेन्शन के साथ मथुरा भेज दिया गया और रियासत का चौथा हिस्सा ज़ब्त कर लिया गया। इसे ८ दिसंबर, १८५५ ई. को लाहौर में राजा खड़ग सिंघ की हवेली में रखा गया, जहाँ नवंबर १८६५ में इसका देहांत हो गया। अंग्रेज़ सरकार द्वारा राजा देविंदर सिंघ के ७ वर्षीय नाबालिग लड़के टिक्का भरपूर सिंघ को जनवरी, १८४७ ई. में गद्दी पर बैठाया गया। यह गुरबाणी का प्रेमी और पक्का नितनेमी था। ९ नवंबर, १८६३ ई. को इसके देहांत के बाद इसका भाई भगवान सिंघ गद्दी पर बैठा, जो आराम-पसंद था और शासन-प्रबंध के योग्य नहीं था। ३१ मई, १८७१ ई. को राजा भगवान सिंघ का देहांत हो गया। उसके कोई औलाद नहीं थी, इस कारण फूलकिया घराने में से बडरुक्खां के सरदार सुक्खा सिंघ का पुत्र हीरा सिंघ, १० अगस्त, १८७१ ई. को नाभा रियासत का वारिस चुना गया।

महाराजा हीरा सिंघ ने अपने आप को एक योग्य राजा साबित किया। विद्या के प्रेमी होने के कारण उसने नाभा रियासत में कई स्कूल खोले और विद्यार्थियों को वज़ीफ़े दिए। प्रजा को न्याय देने के लिए दरबार प्रतिदिन लगता था, जहाँ प्रत्येक आदमी महाराजा तक पहुँच सकता था। इसने नयी इमारतें बनाईं। खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब के लिए वित्तीय सहायता दी और मैकालिफ से 'सिक्ख इतिहास' (The Sikh Religion) लिखवाने के लिए उसकी कई ढंग से मदद की।

१९०४ ई. के फूलकिया स्टेट के गज़टियर के अनुसार नाभा में अंग्रेज़ी, गुरमुखी, फ़ारसी और संस्कृत की पढ़ाई करवाई जाती थी। १८९८ ई. (संवत् १९५५) में फूल कसबे से तीन मील दूर चोटियां गाँव में माध्यमिक स्कूल स्थापित किया गया, जो ज़मीनदारी स्कूल के रूप में भी प्रचलित था। इस स्कूल में केवल कृषि- कार्य करने वालों के बच्चे ही पढ़ सकते थे। दाख़िला राजा साहिब की आज्ञा से ही होता था। कोई शुल्क नहीं था। यहाँ पर गुरमुखी भी पढ़ाई जाती थी। नाभा में एक महिला अध्यापक लड़कियों को पढ़ाने के लिए रखी गई, ताकि लड़कियाँ भी लड़कों की भांति शिक्षा प्राप्त कर सकें। अंग्रेज़ सरकार ने सरदार हीरा सिंघ को महाराजा की पदवी प्रदान की। २५ दिसंबर, १९११ ई. को महाराजा हीरा सिंघ का देहांत हो गया और २४ जनवरी, १९१२ ई. को टिक्का रिपुदमन सिंघ को नाभा रियासत की गद्दी पर बिठाया गया।

-३-

महाराजा रिपुदमन सिंघ १९१२ ई. से १९२३ ई. तक नाभा रियासत के राजा रहे। उनका जन्म ४ मार्च, १८८३ ई. को महाराजा हीरा सिंघ व महारानी जसमेर कौर के घर हुआ। महाराजा हीरा सिंघ के देहांत के बाद नाभा रियासत की गद्दी पर विराजमान होकर इन्होंने लोक-कल्याण के कई कार्य किये। राज-भाग के कार्य के अलावा महाराजा रिपुदमन सिंघ पंथक कार्यों में भी रुचि रखते थे। इनका स्वभाव आज़ादी-पसंद, प्रगतिशील और पंथप्रस्ती वाला था। ये अंग्रेज़ साम्राज्य की धक्केशाही नीतियों को पसंद नहीं करते थे और गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के साथ-साथ आज़ादी आंदोलन के भी बड़े समर्थक थे, जो इन्हें दूसरी रियासतों के राजाओं की अपेक्षा विलक्षणता प्रदान करता है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा इनके अध्यापक थे, जिन्होंने इन्हें गुरमुखी, गुरबाणी और गुरमति के अलावा राजनीति की शिक्षा प्रदान की। इनके मन में धार्मिक पुरुषों का बहुत सम्मान था और ये बाबा अतर सिंघ मसतूआणा के संपर्क में भी रहे। इनका विवाह १९०१ ई. को सरदार गुरदिआल सिंघ (मान) की सुपुत्री बीबी जगदीश कौर के साथ हुआ। १९१८ ई. में इनका दूसरा विवाह मेजर प्रेम सिंघ रायपुरिया की सुपुत्री बीबी सरोजनी देवी के साथ हुआ। महाराजा बनने से पहले महाराजा रिपुदमन सिंघ को १९०६ ईस्वी में दो वर्ष के लिए गवर्नर जनरल की लेजिस्लेटिव काउंसिल का सदस्य निर्वाचित किया गया। इस दौरान ये कई मामलों में कांग्रेसी सदस्यों आदि, जैसे गोपाल कृष्ण गोखले, पंडित मदन मोहन मालवीय आर. बी. घोष आदि का समर्थन करते रहे। इन्होंने सिक्ख विवाहों की प्रमाणिकता के लिए 'अनंद मैरिज एक्ट' तैयार करवाया।

जब महाराजा हीरा सिंघ का देहांत २५ दिसंबर, १९११ ई. को हुआ, उस समय महाराजा रिपुदमन सिंघ फ्रांस में थे। देश-वापसी के पश्चात् २४ जनवरी, १९१२ ईस्वी को इन्हें राजगद्दी पर बिठाया गया। इन्होंने अपनी ताजपोशी की रस्म, अंग्रेज़ सरकार के उच्च अधिकारी से करवाने की बजाय सिक्ख मर्यादा के अनुसार करवाई। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय पर महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा की सहानुभूति अकाली लहर के साथ

रही। महाराजा रिपुदमन सिंघ की ऐसी गतिविधियों को बाग़ी सुर वाली गतिविधियां मान कर ख़ुफ़िया रिपोर्ट अंग्रेज़ सरकार तक पहुँचती रही।

-४-

जैतो का मोर्चा और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की भूमिका : महाराजा रिपुदमन सिंघ स्वतंत्रता संग्रामियों, पंथक दलों और नेताओं के साथ बहुत हमदर्दी रखते थे। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय जहाँ आर्य समाजियों और अंग्रेज़ सरकार ने महंतों की पीठ थपथपाई, वहीं अन्य फूलकिया रियासतों ने अकाली लहर का सहयोग नहीं किया। इसके मुकाबले नाभा रियासत के महाराजा रिपुदमन सिंघ ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का दिल से समर्थन किया। श्री ननकाणा साहिब के साके के पश्चात् आक्रोशस्वरूप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बुलावे पर महाराजा नाभा ने अपनी रियासत में रोष-प्रदर्शन की गतिविधियों को इजाज़त दे रखी थी। उन्होंने स्वयं भी काली पगड़ी सजा (बांध) कर श्री ननकाणा साहिब के साके के ख़िलाफ़ रोष-प्रदर्शन किया और अरदास वाले दिन अपनी रियासत में अवकाश घोषित किया। महाराजा नाभा की इस प्रकार की गतिविधियों में से अंग्रेज़ सरकार को बगावती सुरें सुनाई देने लगीं। हुकूमत के मन में घबराहट थी कि महाराजा नाभा सिक्खों के नेता न बन जाएं, इसलिए उनकी गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी जाने लगी। आने-बहाने साजिशें रच कर महाराजा रिपुदमन सिंघ को बदनाम करने की लगातार कोशिशें की जाने लगीं।

नाभा और पटियाला दोनों पड़ोसी रियासतें थीं, जिनके आपसी झगड़े अक्सर अंग्रेज़ सरकार की कचहरी तक पहुँचते रहते थे। महाराजा की बगावती रुचि से परेशान अंग्रेज़ सरकार ने पटियाला से सम्बन्धित एक मामूली झगड़े को मुद्दा बना कर उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश से महाराजा रिपुदमन सिंघ को दोषी करार दे दिया। ७ जुलाई, १९२३ ई. को चिट्ठी भेज कर गद्दी छोड़ने के लिए मजबूर किया गया और दबाव बना कर गुज़ारा-भत्ता लेने का लिखित इकरारनामा करवा लिया। ९ जुलाई, १९२३ ई. को ३ लाख रुपए वार्षिक पेन्शन देकर देहरादून भेज दिया। अंग्रेज़ सरकार ने रियासत नाभा के प्रबंध के लिए महाराजा के पुत्र टिक्का प्रताप सिंघ को नाभा का शासक (Ruler) घोषित कर, उसके साथ एक अंग्रेज़ को प्रशासक नियुक्त कर दिया। इस प्रकार अंग्रेज़ सरकार ने अपनी घटिया चालों का शिकार बना कर महाराजा नाभा को गद्दी से उतार दिया। महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा को गद्दी से उतारने पर सिक्ख जगत में एक बड़ा आक्रोश उत्पन्न हुआ। जैतो का मोर्चा इसी आक्रोश में से उत्पन्न एक बड़ी ऐतिहासिक घटना बन अस्तित्व में आया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस घटना का ज़बरदस्त विरोध किया गया। ५ अगस्त, १९२३ ई. को श्री अमृतसर साहिब में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सभा में सहानुभूति प्रस्ताव पारित किया गया। महाराजा रिपुदमन सिंघ के साथ एकजुटता और आक्रोश का प्रदर्शन करने के लिए ९ सितंबर, १९२३ ई. को नाभा दिवस (Nabha Day) मनाने का फ़ैसला हुआ। उस दिन जगह-जगह जुलूस निकालना, दीवान सजा

कर प्रस्ताव पारित करना और महाराजा नाभा के साथ हुई बेइन्साफ़ी को दूर करवाने के लिए अरदास करने की अपील की गई। पूरे पंजाब के अलावा सिक्ख रियासतों और दूसरे राज्यों की सिक्ख संगत पर इस अपील का भारी प्रभाव पड़ा। जगह-जगह जुलूस निकाले गए, दीवान सजा कर अरदास की गई और प्रस्ताव पारित किए गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा महाराजा नाभा के हक में आवाज़ उठाने का असर यह हुआ कि सरकार के विरुद्ध लोगों का आक्रोश, आंदोलन (Agitation) का रूप धारण करने लगा। अंग्रेज़ हुकूमत द्वारा जगह-जगह पर गिरफ़्तारियाँ करने और अत्याचार करने का सिलसिला शुरू हो गया।

२५, २६ और २७ अगस्त को जैतो के इलाके की संगत द्वारा गुरुद्वारा गंगसर साहिब में दीवान सजा कर महाराजा नाभा की बहाली (पुनर्नियुक्ति) का प्रस्ताव पारित किया गया। १४ सितंबर, १९२३ ई. को गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो में सजे दीवान में चल रहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के श्री अखंड पाठ साहिब के दौरान संगत गुरबाणी का पाठ सुन रही थी तो वर्दीधारी हथियारबंद सिपाहियों ने गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल होकर संगत में बैठे श्रद्धालुओं व सेवकों को गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि ताबिआ में बैठे सिंघ को हाथ पकड़ कर घसीटते हुए गिरफ़्तार करके ले गए और गुरुद्वारा साहिब में किसी के भी दाख़िल होने पर पाबंदी लगा दी। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का श्री अखंड पाठ साहिब खंडित कर दिया गया।

अंग्रेज़ सरकार द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हुई बेअदबी की इस भड़काऊ कार्यवाही ने सिक्ख संगत के हृदय को गंभीर ठेस पहुंचायी। यह ख़बर जंगल की आग की भाँति चारों तरफ़ फैल गई, जिस कारण सिक्ख संगत के अंदर आक्रोश और जोश की लहर भड़क उठी। महाराजा नाभा को गद्दी से उतारने वाला मामला, सरकार की बेअदबी भरी कार्यवाही ने धार्मिक मसला बना दिया। सारा सिक्ख पंथ एकआवाज़ और एकजुट होकर अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध खड़ा हो गया। सरकारी जब्र का मुकाबला करने के लिए जैतो का मोर्चा शुरू हुआ, जिसमें सैकड़ों सिंघों ने गिरफ़्तारियाँ दीं और पुलिस का अत्याचार सहन किया। मोर्चे का मकसद श्री अखंड पाठ साहिब को खंडित करने के पश्चाताप के तौर पर १०१ श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डालने और महाराजा रिपुदमन सिंघ की पुनर्नियुक्ति करवाना था। श्री अकाल तख़्त साहिब से १५ सितंबर, १९२३ ई. से प्रतिदिन २५-२५ सिंघों के जत्थे जैतो की तरफ जाने शुरू हुए। १३ अक्तूबर, १९२३ ई. को सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल को 'कानून के ख़िलाफ़ जमातें' करार देकर कई सदस्यों, कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार कर लिया। इसके बावजूद जैतो में जत्थे भेजने का यह सिलसिला ७ महीने तक जारी रहा।

जैतो के मोर्चे के दौरान इस पंथक फैसले/कार्यवाही का सरकार के हठ पर कोई असर न होता देख कर श्री अकाल तख़्त साहिब से ९ फरवरी, १९२४ ई. को बसंत पंचमी वाले दिन २५

की जगह ५०० सिंघों का जत्था जत्थेदार ऊधम सिंघ गोहलवड़ के नेतृत्व में भेजा गया, जो २१ फरवरी, १९२४ ई. को गुरुद्वारा टिब्बी साहिब जैतो पहुँचा। जत्थे को रोकने की पूरी कोशिश की गई। संगत के जोश को जब रोका न जा सका तो पुलिस ने गोली चला दी और एक बड़ा साका घटित हो गया। एक अनुमान के अनुसार इस साके के दौरान तकरीबन एक सौ सिंघों की शहादत हुई और तकरीबन दो सौ सिंघ घायल हो गए तथा सैकड़ों सिंघों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना के बाद सिक्ख पंथ में प्रचंड आक्रोश भर गया और फिर जैतो में शहीदी जत्थे भेजने का सिलसिला शुरू हो गया। बच्चा-बच्चा गलियों में गाता फिरता था -- ''नाभे नूँ ज़रूर जावांगा, भावें सिर कट जावे मेरा।'' नाभा जेल में भी बहुत-से सिंघ कैद किये गए और उन पर अमानवीय अत्याचार किया गया। जेल भर जाने पर कैदियों को बीड़ दुसांझ के जंगल में छोड़ा जाने लगा। यहाँ पर भी सिंघों की शहादत हुई, जिनकी याद में गुरुद्वारा अकालगढ़ साहिब का निर्माण हुआ। तत्पश्चात् अप्रैल, १९२५ ई. तक विभिन्न स्थान से पाँच-पाँच सौ सिंघों-सिंघणियों के अनेक जत्थे जैतो की तरफ भेजे गए। बाहरी राज्यों (कलकत्ता) और विदेशों (कनाडा, हाँगकाँग, शंघाई आदि स्थान) से भी सिंघ जत्थों के रूप में जैतो पहुँचे। सरकारी जब्र उसी तरह जारी रहा। अंत में मोर्चे की जीत हुई और गिरफ़्तार किए सिंघों की रिहाई हुई। सिक्ख संगत द्वारा २१ जुलाई, १९२५ ई. को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब की लड़ी शुरू की गई और ६ अगस्त, १९२५ ई. को भोग डाले गए।

यहाँ यह वर्णन करना वाजिब होगा कि जैतो के मोर्चो के समर्थन में मदन मोहन मालवीय, डॉ. सैफुद्दीन किचलू तथा ए. टी. गिडवानी जैसे नेताओं ने भी भाग लिया और कई जेल भी गए। महात्मा गांधी जैसे नेता मोर्चे के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के बावजूद अकालियों को जैतो में और जत्थे भेजने से संकोच करने के लिए प्रेरित करते रहे। यहाँ तक कि वे मोर्चे के नेताओं पर महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा की पुनर्नियुक्ति के मुद्दे से दूरी बनाने पर ज़ोर भी देते रहे।

इतिहास ने इस कद्र करवट ली कि महाराजा नाभा की पुनर्नियुक्ति के लिए शुरू हुए संघर्ष का 'जैतो के मोर्चे' के तौर पर धार्मिक रुख लेने के बाद पुनर्नियुक्ति का मुद्दा हाशिए पर चला गया। दूसरी तरफ महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा को ५ वर्ष देहरादून रखा गया। इसी दौरान उन्होंने श्री हजूर साहिब से अमृत-पान कर अपना नाम 'गुरचरन सिंघ' रख लिया। इसके बाद महाराजा नाभा अपना दसवंध (दशमांश) हजूर साहिब भेजते रहे। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और आज़ादी लहर के साथ जुड़े नेताओं के साथ संपर्क रखने के कारण अंग्रेज़ सरकार द्वारा महाराजा नाभा को दूर-दक्षिण तमिलनाडु के कोडईकनाल (Kodaikanal) भेज दिया गया। दो वर्ष पश्चात् उनकी पेंशन तीन लाख रुपए सालाना की बजाय एक लाख बीस हज़ार रुपए कर दी गई तथा अन्य बहुत-सी सुविधाएं वापस लेकर कई तरह की पाबंदियाँ लगा दीं। वहां पर वे कई प्रकार की बीमारियों, मक्कारियों और दुश्वारियों के साथ जूझते हुए १३ दिसंबर, १९४२ ई. को अकाल प्रस्थान कर गए।

-५-

इस प्रकार भली-भाँति पता चलता है कि जब अन्य रियासतों के राजा-महाराजा अपनी- अपनी राजगद्दी बचाने के लिए अंग्रेज़ सरकार के पैरों में गिर रहे थे तो महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार करने की बजाय हर कदम पर पंथक दलों के साथ खड़े रहे। उनके इसी स्वभाव और नीतियों के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा उन्हें गद्दी से उतारने के विरोध में उनकी पुनर्नियुक्ति के लिए हर संभव प्रयत्न किए गए। महाराजा नाभा को गद्दी पर पुनः बैठाने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब की छत्र-छाया में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लंबा संघर्ष प्रारंभ किया गया, जिसे सिक्ख इतिहास में हम 'जैतो का मोर्चे' के नाम से जानते हैं। इस समूचे संघर्ष में 'नाभा दिवस' का विशेष महत्व है, जिस दिन पंथक दलों द्वारा पंजाब सहित देश-विदेश में विभिन्न स्थानों पर दीवान सजा कर अरदास की गई, जुलूस निकाले गए और महाराजा नाभा के साथ हुई बेइन्साफ़ी को दूर करवाने के लिए प्रस्ताव पारित किये गए। चाहे अंग्रेज़ सरकार ने अपनी साज़िश वृत्ति के साथ महाराजा रिपुदमन सिंघ को गद्दी पर पुनः स्थापित करने की जगह उनके सुपुत्र टिक्का प्रताप सिंघ को बैठा कर सिक्ख संगत के आक्रोश को ठंडा करने का यत्न किया परंतु अंग्रेज़ सरकार की इस बदनीति का पता चलने से आक्रोश और भी प्रचंड हुआ, जिसका निष्कर्ष जैतो के मोर्चे के रूप में सामने आया। दूरदर्शी नेतृत्व की कमी और हालात के मद्देनज़र चाहे महाराजा रिपुदमन सिंघ की पुनर्नियुक्ति न हो सकी, परंतु इस ऐतिहासिक घटनाक्रम ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर व आज़ादी की लहर को प्रचंड करने में अहम भूमिका निभाई।

आज १०० वर्ष पश्चात् उन लम्हों को स्मृति में ताज़ा रखने की ज़रूरत के तौर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नाभा दिवस तथा जैतो के मोर्चो के शताब्दी कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास, पंथक चेतना की प्रचंडता का प्रतीक बन कर हमारी नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करेगा।

सहायक पुस्तकें :

१. सरदार नरैण सिंघ, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर (१९२०-१९२५), धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, १९७८.

२. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, आरसी पब्लिशर्स, दिल्ली, २०१६.

३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरुशबद रत्नाकर महान कोश (भाग प्रथम और द्वितीय), भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर साहिब, २००४.

४. जत्थेदार ऊधम सिंघ वरपाल, शहीदी यात्रा अथवा साका जैतो (नाभा), सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी), श्री अमृतसर साहिब, १९८०.

५. Truth About Nabha, Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar, Sahib, 1923.

६. Harbans Singh (Editor-in-Chief), The Encyclopaedia of Sikhism (Vol. I to IV), Punjabi University, Patiala.

७. J.S. (Grewal) and Indu Banga, A Political Biography of Maharaja Ripudaman Singh of Nabha, Oxford University Press, New Delhi, 2018

८. Punjab States Gazetteers : Phulkian States (The Punjab Government Press, Lahore, 1909), Revenue and Rehabilitation Department Punjab, Chandigarh, 2000.

नाभा रियासत और अंग्रेज शासन

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बाद गुरुआई पर आसीन हुए तो उन्होंने अपना ध्यान सिक्ख पंथ को संगठित करने पर अधिक लगाया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के काल में सिक्खों को मुगलों के चार आक्रमणों का उत्तर देने हेतु रणभूमि में उतरना पड़ा था। यद्यपि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इन चारों युद्धों में शानदार सफलता प्राप्त की थी फिर भी संगठन-कार्य आवश्यक हो गया था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने कई धर्म प्रचार-यात्रायें भी कीं और स्थान-स्थान पर जाकर संगत को उपदेश दिये। इससे लोगों में नव चेतना व उत्साह का संचार हुआ। अपनी यात्राओं के क्रम में जब गुरु साहिब महिराज नामक स्थान पर पहुंचे जो पंजाब के मालवा क्षेत्र में आता था, तो गांव का चौधरी काला भी उनके दर्शन करने आया। वास्तव में इस गांव को बसाने की प्रेरणा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ही काला के पिता मोहन को दी थी। यहाँ पर लला बेग तथा कमर बेग के साथ हुए युद्ध तथा प्राप्त विजय के कारण इस गांव को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का विशेष आशीर्वाद प्राप्त है। श्री गुरु हरिराय साहिब का दरबार महिराज में लगा तो बड़ी संख्या में लोग उनके दर्शन व आशीर्वाद के लिये आने लगे। एक दिन गांव का चौधरी काला अपने भतीजों-- संदली व फूल को लेकर गुरु साहिब के पास आया। इन दोनों बच्चों के पिता की एक युद्ध में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के काल में मृत्यु हो चुकी थी। फूल की आयु पांच वर्ष थी। जब वह श्री गुरु हरिराय साहिब के समक्ष आया तो अपने पेट को नंगा कर ड्रम की तरह बजाने लगा। श्री गुरु हरिराय साहिब ने जब इसका कारण जानना चाहा तो चौधरी काला ने कहा कि यह भूखा है और खाने को कुछ मांग रहा है। इसका भाव था कि यह अभावग्रस्त है और गुरु साहिब का आशीर्वाद चाहता है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उस अबोध बालक फूल को आशीर्वाद दिया कि वह महान, प्रसिद्ध व शासक बनेगा। गुरु साहिब ने उदारता की वर्षा करते हुए उस बच्चे फूल से कहा कि उसके वंशजों का यमुना नदी तक अधिकार होगा और कई पीढ़ियों तक साम्राज्य स्थापित रहेगा। उन्हें उसी अनुपात में आदर, सम्मान मिलता रहेगा जैसी वे मानवता की सेवा करते रहेंगे।

श्री गुरु हरिराय साहिब का भरपूर संरक्षण प्राप्त होने से भाई फूल का सम्मान बढ़ गया। भाई फूल के घर छः पुत्र पैदा हुए। भाई फूल के सबसे बड़े पुत्र तिलोक सिंघ और राम सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान कर सिंघ सजे। भाई तिलोक सिंघ नाभा रियासत और भाई राम सिंघ पटियाला रियासत के उद्भव का कारण

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

बने। नाभा, पटियाला व जींद रियासतों पर भाई फूल के वंशजों ने ही राज्य किया, इसीलिये इन्हें फूल के राजा व इन रियासतों को फूलकियां स्टेट कहा जाता है। नाभा रियासत की स्थापना भाई तिलोक सिंघ के प्रपोत्र हमीर सिंघ ने सन् १७५५ में रखी थी। सन् १७८३ में उसका पुत्र जसवंत सिंघ गद्दी पर बैठा। उसके ब्रिटिश राज्य से अच्छे सम्बन्ध थे। उसने अंग्रेजों से एक राजनीतिक संधि पर भी हस्ताक्षर किये थे। जसवंत सिंघ के बाद उसका पुत्र देविंदर सिंघ गद्दी का उत्तराधिकारी बना। देविंदर सिंघ अंग्रेजों व सिक्खों के मध्य हुए युद्धों में निरपेक्ष रहा। युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजों ने उस पर कुटिलतापूर्ण आरोप लगाया कि उसने सिक्खों को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काया था और इस तरह नाभा राज्य और अंग्रेजों के मध्य हुई संधि का उल्लंघन किया है। अंग्रेजों ने नाभा रियासत का बड़ा भाग दंड के तौर पर जब्त कर लिया और देविंदर सिंघ के नाबालिग पुत्र भरपूर सिंघ को गद्दी पर बैठा दिया। सन् १८५७ के विद्रोह में भरपूर सिंघ ने अंग्रेजों की सहायता की। इससे प्रसन्न होकर सरकार ने उसे वायसराय कौंसिल का सदस्य बना दिया।

भरपूर सिंघ की सन् १८६३ में मृत्यु हो गई। भरपूर सिंघ के स्थान पर उसके छोटे भाई भगवान सिंघ ने राजपाट संभाल लिया। छः वर्ष राज्य करने के बाद उसकी भी मृत्यु हो गई। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने इस राज्य का उत्तराधिकारी तय करने के लिये एक कमिशन नियुक्त किया, क्योंकि भगवान सिंघ संतानहीन था और उसने कोई पुत्र गोद भी नहीं लिया था। कमिशन की अनुशंसा पर सरदार हीरा सिंघ को नाभा का राजा बनाया गया। महाराजा हीरा सिंघ ने नाभा पर सन् १८७१ से सन् १९११ तक राज्य किया। अपने चालीस वर्ष के शासन-काल में उसने प्रजा के कल्याण के लिये अनेक कार्य किये। महाराजा हीरा सिंघ ने जहां अंग्रेजों की सहायता की वहीं खालसा प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना में भी आर्थिक योगदान दिया। उसने खालसा कॉलेज को भी संरक्षण प्रदान किया व सिक्ख धर्म के इतिहास की शोध में भी रुचि ली। महाराजा ने मैकालिफ द्वारा सिक्ख धर्म के लिखे जा रहे इतिहास में भी उसकी सहायता की थी, जो एक बड़ा कार्य था। आज मैकालिफ द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास प्रमुख सन्दर्भ ग्रन्थों में एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है।

डॉ. गंडा सिंघ व सरदार हरबंस सिंघ जैसे सिक्ख विद्वानों ने उसे एक उदार, पवित्र, योग्य व न्यायप्रिय शासक के रूप में देखा। महाराजा हीरा सिंघ की २५ दिसंबर, सन् १९११ को मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र महाराजा रिपुदमन सिंघ नाभा रियासत की गद्दी पर बैठे।

महाराजा रिपुदमन सिंघ का जन्म सन् १८८३ ई. में हुआ था। जब वे गद्दी पर बने तो उनकी आयु २८ वर्ष की थी। इतिहासकारों के अनुसार वे आरंभ से ही धार्मिक वृत्तियों के स्वामी थे और सदैव सिक्खों के हित के लिये चिंतित रहते थे। ये गुण उन्हें संस्कारों में प्राप्त हुए थे। एक इतिहासकार के अनुसार वे अकेले ऐसे सिक्ख महाराजा थे जो गुरबाणी का शुद्ध पाठ कर सकते थे। महाराजा बनने के बाद उनकी छवि एक

देशभक्त और स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उभर कर सामने आई। अकालियों और देशभक्त पंजाबियों के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध थे। राजगद्दी पर बैठने से पूर्व महाराजा रिपुदमन सिंघ सन् १९०६ से सन् १९०८ तक वायसराय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य भी रहे। इस अंतराल में श्री गोपाल कृष्ण गोखले व श्री रास बिहारी बोस जैसे कौंसिल के राष्ट्रभक्त सदस्यों के साथ अच्छा तालमेल बना था। महाराजा रिपुदमन सिंघ ने सिक्खों को विवाह-संस्कारों की जटिलताओं से मुक्त करने का एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने कौंसिल में सिक्खों के लिये 'अनंद मैरिज बिल' प्रस्तुत किया था। उधर फरवरी, सन् १९०७ में एक घटना घटी। एक ग्रंथी, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा में बैठा था, इसलिये निकाल दिया गया, क्योंकि उसने उस समय आये एक अंग्रेज अधिकारी का अभिवादन नहीं किया था। महाराजा ने यह मुद्दा भी प्रभावी ढंग से उठाया। उन्होंने एक अंग्रेज डॉ. ट्रम्प द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग्रेजी में किए आपत्तिजनक अनुवाद का प्रश्न भी उठाया था।

कौंसिल की मार्च, १९०८ ई. की कलमबद्ध कार्यवाही के अनुसार एक अवसर पर बहस में भाग लेते हुए महाराजा रिपुदमन सिंघ ने कहा था कि यूरोपियन अधिकारी प्रायः भारतीयों के प्रति बातचीत में और लिखापढ़ी में भी शिष्ट व्यवहार नहीं करते हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जानने व सीखने का प्रयत्न न करना बुराई को बढ़ाना है।

ठीक उस समय, जब ब्रिटिश सरकार का सूर्य तपती दोपहर जैसा दमक रहा था और भारत की लगभग सभी छोटी-बड़ी रियासतें सरकार के समक्ष नतमस्तक थीं, सन् १८५७ का विद्रोह बुरी तरह से कुचला जा चुका था, सरकार की नीतियों व व्यवहार के विरुद्ध बोलना, वो भी सरकारी मंच पर, महाराजा रिपुदमन सिंघ के बड़े साहस व नैतिकता को प्रकट करने वाला था। महाराजा का यह साहस उस कीमत पर था कि सरकार उनके विरुद्ध कड़े से कड़ा प्रतिशोधात्मक कदम उठा सकती है। पंजाब की लगभग सभी रियासतें या तो मूकदर्शक बनी हुई थीं या ब्रिटिश सरकार की चाटुकारिता में व्यस्त थीं। छोटी-मोटी पदवियां और पुरस्कार ही उन्हें महान उपलब्धि की भांति लग रहे थे। कांग्रेस आन्दोलनरत थी, किन्तु वह भी किसी निश्चित दिशा के अभाव में वांछित प्रभाव नहीं उत्पन्न कर पा रही थी। इधर पंजाब में जिस तरह से गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आन्दोलन जनव्यापी होता जा रहा था और अंग्रेजों के विरोध के बावजूद निरंतर सफलतायें अर्जित कर रहा था, उसने कांग्रेस नेताओं को भी चकित किया हुआ था। जो दमन अकाली सह रहे थे उसका शतांश भी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और नेताओं को नहीं सहना पड़ा था। जलियां वाला बाग से कई गुना भीषण व निर्मम नरसंहार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में हुआ था। प्राणों की कुर्बानी देकर भी सिक्ख उत्साह से भरे हुए थे। उन्हें मात्र सभी गुरुद्वारों की स्वतन्त्रता का अपना लक्ष्य दिखाई देता था जिसे वे शीघ्र से शीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते थे। विडंबना यह थी कि पंजाब का सामाजिक वातावरण समस्यायें उत्पन्न

कर रहा था। सांप्रदायिक विष ने पंजाब को अपने प्रभाव से अस्थिर कर दिया था। १३ अप्रैल, सन् १९२३ की वैशाखी से दो दिन पूर्व ही श्री अमृतसर साहिब में एकाएक हिंदू-मुस्लिम टकराव आरंभ हो गया। श्री अमृतसर साहिब ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का केंद्र था, जहां से सारे मोर्चे संचालित होते थे। ऐसे हालात में सिक्खों ने बड़ी सूझबूझ से काम लेते हुए इस टकराव को अपने मार्ग में बाधा नहीं बनने दिया।

इससे पूर्व जब नवंबर, १९२० ई. में दिल्ली के गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की अंग्रेजों द्वारा गिराई गई दीवार का पुनर्निर्माण करने के लिये शहीदी जत्था रवाना होने वाला था तो महाराजा रिपुदमन सिंघ ने मध्यस्थता कर अंग्रेजों को दीवार बनवा देने के लिये तैयार कर लिया था। दीवार बनने से बड़ी अप्रिय घटना होते-होते बच गई थी। अंग्रेजों से अच्छे सम्बन्ध होने के बावजूद मुद्दों पर उनके विरुद्ध खड़े होना और सिक्खों के हित के लिये आगे आना महाराजा के व्यक्तित्व की गहराई प्रकट करने वाला था। इस सोच ने उनमें निर्भीकता कूट-कूट कर भर दी थी। जब गवर्नर जनरल कौंसिल में अंग्रेज शासन विरोधी आयोजनों को रोकने का बिल लाया गया था तब महाराजा रिपुदमन सिंघ ने श्री गोपाल कृष्ण गोखले व श्री रास बिहारी बोस के साथ मिल कर इसका कड़ा विरोध किया था। इसी समय झेलम जिले में एक गुरुद्वारा सिक्ख विरोधियों द्वारा जला दिया गया था। आरोपियों को मजिस्ट्रेट ने दोष-मुक्त कर दिया था। इस विषय को भी उन्होंने प्रभावी ढंग से उठा कर प्रशासन को कटघरे में खड़ा कर दिया था। तात्पर्य यह कि महाराजा को जब भी अवसर मिलता और उन्हें देश अथवा सिक्खों के हित पर आघात होता दिखता वे सरकार के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होते और तार्किक ढंग से अपनी बात रखने से पीछे नहीं हटते थे। अपनी श्रेष्ठ कार्य-शैली के कारण देश के अनेक राष्ट्रवादी नेताओं के साथ उनके भले सम्बन्ध बन गये थे। उन्होंने श्री पुरुषोत्तम दास टंडन जैसे नेता को अपनी रियासत में मंत्री बनाया था। महाराजा रिपुदमन सिंघ ने प्रेस की शक्ति को पहचान कर स्वयं एक समाचार-पत्र प्रकाशित करने का निर्णय किया था। इस कार्य के लिये उन्होंने श्री एस. आर. लाइस की सेवायें लीं, जो इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले राष्ट्रीय विचारधारा के समाचार-पत्र 'लीडर' में काम कर चुके थे।

यहां दो अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख आवश्यक हो जाता है जिससे महाराजा रिपुदमन सिंघ की स्वतंत्र चेतना और निर्भीकता प्रकट होती है और जो ब्रिटिश सरकार की अप्रसन्नता को बढ़ाने वाली थीं। पहली घटना बनारस की है, जहां बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के स्थापना समारोह में महात्मा गांधी ने भाषण दिया था। उनका भाषण पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था, इसलिये वहां उपस्थित अनेक रियासतों के राजा-महाराजा भाषण के बीच में ही उठ कर चले गये थे। एक महाराजा रिपुदमन सिंघ ही थे, जिन्होंने महात्मा गांधी का भाषण समाप्त होने तक वहां बैठे रहने का साहस दिखाया था। दूसरी घटना मसूरी की है, जहां बाल गंगाधर

तिलक की स्मृति में एक सभा का आयोजन किया गया था। महाराजा ने न केवल इस सभा की अध्यक्षता की, बल्कि अपने भाषण में उनकी भरपूर प्रशंसा भी की थी और उनका स्मारक बनाने के लिये धन का योगदान भी दिया था। उनका देश-भक्ति व सिक्खों के धार्मिक, सामाजिक मुद्दों के समर्पित संरक्षक का चरित्र खुल कर सामने आ चुका था। इससे उनका कोई स्वार्थ नहीं सिद्ध होता था। यह उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता का फल था, जिसने उन्हें निर्भीकता से अपनी सोच को मूर्त रूप देने का कार्य किया था। प्राय: देखा जाता है कि सोच तो होती है किन्तु साहस नहीं होता। कहीं साहस होता है किन्तु सोच नहीं होती।

महाराजा रिपुदमन सिंघ में उपरोक्त वर्णित सारे ही गुणों का सुमेल था। उनमें धर्म भी था, ज्ञान भी था और राजसी संस्कार भी थे। ब्रिटिश सरकार को ऐसे लोग चुनौतीस्वरूप दिखते थे। जैतो का मोर्चा क्यों लगा, उसे समझने के लिये इस पृष्ठभूमि को जानना अति आवश्यक हो जाता है। सिक्खों में अन्य रियासतों की अपेक्षा नाभा के महाराजा रिपुदमन सिंघ के प्रति विशेष भावना के विकसित होने के कई अन्य कारण भी थे। सिक्खों, विशेष रूप से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आन्दोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं को महाराजा में अपना मित्र और सहयोगी नजर आता था।

महाराजा रिपुदमन सिंघ ने कभी भी गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आन्दोलन के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करने में संकोच नहीं किया था। इतिहासकारों के अनुसार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के भयावह हत्याकांड, शांतिपूर्ण सिक्खों की शहादत के बाद जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने विरोधस्वरूप ५ अप्रैल, सन् १९२१ को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब दिवस मनाने की घोषणा की थी तब महाराजा ने उस दिन न केवल उपवास रखा था बल्कि काली पगड़ी भी बांधी थी और रात को नीचे जमीन पर सोये थे। इससे सिक्खों को बड़ा नैतिक बल प्राप्त हुआ था। नाभा राज्य में सिक्खों के काली पगड़ी बांधने व कृपाण धारण करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था, जबकि पटियाला व अन्य राज्यों में इस पर रोक थी। स. सोहन सिंघ जोश के अनुसार, दूसरी प्रमुख सिक्ख रियासत पटियाला थी, जो ब्रिटिश राज्य का बगल-बच्चा बनी हुई थी। 'दि इंडियन एनुअल रजिस्टर १९२३' में अंकित है कि अप्रैल, सन् १९२२ में जब ब्रिटिश सरकार ने बड़े स्तर पर अकालियों को पूरे पंजाब में गिरफ्तार करना आरंभ किया था तब नाभा के महाराजा ने इसमें सहयोग देने से इन्कार कर दिया था।

महाराजा नाभा, जो जैतो के मोर्चे का केन्द्रीय कारण थे, एक स्वतंत्र सोच से अपने राज्य को संचालित करने के इच्छुक थे। उन्हें इसमें ब्रिटिश सरकार का किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं था। कहते हैं कि सन् १९१८ में एक बार वायसराय ने सभी राज्यों से यह जानना चाहा था कि क्या ब्रिटिश सरकार द्वारा उनसे की गई संधि का कहीं कोई उल्लंघन तो नहीं हो रहा। उस समय महाराजा नाभा ने एक लंबी सूची प्रेषित की थी और उदाहरण दिये थे कि कैसे उनकी सत्ता का

अतिक्रमण किया जा रहा है।

महाराजा रिपुदमन सिंघ की स्वतंत्र सोच का प्रभाव अन्य राज्यों के सम्बन्धों पर भी पड़ना स्वाभाविक था। नाभा रियासत के पटियाला रियासत से सम्बन्ध गत एक दशक से बिगड़ते जा रहे थे, जबकि दोनों ही राज्यों का उद्गम-स्रोत एक ही था। ये दोनों ही रियासतें फूलकियां रियासत का अंग थीं। नाभा रियासत के शासकों के पूर्वज जहां भाई फूल के सबसे बड़े पुत्र सरदार तिलोक सिंघ थे, वहीं पटियाला रियासत के शासकों के पूर्वज भाई फूल के अन्य पुत्र सरदार राम सिंघ थे। जींद सहित ये रियासतें मूलत: श्री गुरु हरिराय साहिब के आशीर्वाद से अस्तित्व में आई थीं। आशा की जाती थी कि नाभा, जींद व पटियाला रियासत की नीतियों व आचरण में समानता और परस्पर समन्वय होगा, किन्तु शासकों के व्यक्तिगत आचरण भिन्न होने के कारण यह संभव नहीं हो सका था। इनमें विशेष रूप से नाभा और पटियाला में दूरियां व वैमनस्य बढ़ता जा रहा था। पटियाला के महाराजा रंग-रस में डूबे रहते थे। दीवान जरमनी दास ने अपनी पुस्तक 'महाराजा' में लिखा है कि पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंघ ने तो तंत्रवाद के अति घृणित रूप को अस्तित्व में लाकर, व्यभिचार को धर्म का चोला पहना कर अपने महल में एक पूज्यनीय स्थान पर बैठा दिया था। पाठक ऊपर देख ही चुके हैं कि नाभा रियासत के महाराजा रिपुदमन सिंघ का चरित्र इससे एकदम भिन्न और विपरीत था। दोनों राज्यों में कुछ सीमा का विवाद तो था ही, ऐसी घटनायें भी घटित होती गईं, जिनसे इनके परस्पर सम्बन्ध कटु होते गये। एक घटना पटियाला की रहने वाली महिला ईशर कौर की है, जो नाभा रियासत में एक चोरी के केस में वांछित थी। नाभा पुलिस को जब पता चला कि पटियाला के महाराजा का सहायक उस महिला को लाहौर ले गया है, तो सहायक को वहां गिरफ्तार कर लिया। लाहौर पुलिस ने बिना उनकी अनुमति के हुई गिरफ्तारी को अवैध मानते हुए नाभा के पुलिस कर्मियों को हिरासत में ले लिया। इससे बड़ा विवाद उत्पन्न हो गया। बाद में यह तथ्य सामने आया कि ईशर कौर पटियाला की सी. आई. डी. विभाग में काम करती है। नाभा की उक्त महिला को सौंपने की मांग को पटियाला के महाराजा ने अस्वीकार कर दिया। इस घटना ने दोनों राज्यों में मतभेद की खाई को और बढ़ा दिया।

इसी तरह और घटनायें घटीं। सितंबर, सन् १९२० में पटियाला रियासत के एक पुलिस दरोगा को बलात्कार के आरोप में नाभा में गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिनों बाद एक सिपाही को भी हिरासत में ले लिया गया। दीवान जरमनी दास की बहु प्रचारित पुस्तक 'महाराजा' के अनुसार एक सुंदर स्त्री रचनी को आसक्त होकर महाराजा पटियाला ने नाभा रियासत से अपहृत करवा लिया था। इससे दोनों राज्यों में विवाद बहुत बढ़ गया। महाराजा पटियाला ने महाराजा नाभा पर पटियाला रियासत की संप्रभुता भंग करने, पटियाला रियासत के कई नागरिकों को अवैध ढंग से कैद कर लेने जैसे अनेक आरोप लगाये थे। विवाद को सुलझाने के लिये

महाराजा रिपुदमन सिंघ ने बिहार के एक प्रसिद्ध वकील सर अली इमाम को जांच का कार्य सौंपा। अली इमाम ने महाराजा नाभा को ही दोषी ठहरा दिया। ब्रिटिश सरकार सारे घटनाक्रम का निकटता से आंकलन कर रही थी। स्थिति का लाभ उठाते हुए और महाराजा नाभा को सबक सिखाने के उद्देश्य से सरकार ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज श्री स्टुअर्ट को नाभा-पटियाला विवाद की जांच के लिये आधिकारिक तौर पर नियुक्त कर दिया। श्री स्टुअर्ट ने जांच का कार्य ४ जनवरी, सन् १९२३ से आरंभ कर दिया। महाराजा पटियाला ने महाराजा नाभा पर कुल आठ आरोप लगाये थे। श्री स्टुअर्ट का जांच-कार्य चार महीने तक चला, जिसमें छः आरोप सही सिद्ध घोषित किए गए। स्टुअर्ट ने तीन बिन्दुओं पर महाराजा रिपुदमन सिंघ को व्यक्तिगत रूप से दोषी ठहराया। ये आरोप निम्नलिखित थे :-

१. महाराजा ने रियासत के लोगों के कल्याण के लिये कुछ नहीं किया।

२. उन्होंने रियासत के लोगों की शिकायतें न तो सुनीं, न ही उनके निवारण के लिए कोई कदम उठाया।

३. वे स्वयं को ब्रिटेन के ताज और सरकार के प्रति भक्ति और अधीनता से आबद्ध करने में विफल रहे।

श्री स्टुअर्ट की यह जांच रिपोर्ट उन शक्तियों के लिये एक बड़ा अवसर बन गई, जो महाराजा रिपुदमन सिंघ के स्वत्रन्त्र व निर्भीक सोच के गर्भ से उभर व निखर रहे जनप्रिय व्यक्तित्व से ईर्ष्यालु हो रहे थे और उन्हें आगे बढ़ने से रोकना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार को भी ऐसे ही अवसर की प्रतीक्षा थी कि वह महाराजा नाभा पर अंकुश लगा सके और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को अलग-थलग कर सके। सरकार के पास सारी सूचनायें थीं कि महाराजा नाभा के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ निकटवर्ती सम्बन्ध हैं और वे सिक्ख कैदियों और उनके परिवारों की आर्थिक सहायता करते हैं। महाराजा सिक्खों के समाचार-पत्र 'पंथ सेवक' की भी निरंतर सहायता करते रहे थे। वे उस सरदार सरदूल सिंघ कवीशर की भी आर्थिक सहायता करते रहते थे जो सिक्खों का समर्पित व सक्रिय नेता था और जिसने गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की सरकार द्वारा गिराई गई दीवार पुनः बनाने के लिये सौ सिक्खों का शहीदी जत्था लेकर जाने की घोषणा की थी। ब्रिटिश सरकार के सन् १९२२ के एक दस्तावेज के अनुसार, सरकार महाराजा पटियाला को आगे लाकर उसका उपयोग सिक्खों को साधने में करना चाहती थी। वास्तव में ब्रिटिश सरकार को पंजाब पर अपना नियन्त्रण स्थापित किये अधिक समय नहीं हुआ था। उसे सदैव आशंका बनी रहती थी कि सिक्ख पंजाब पर पुनः अधिकार स्थापित करने का प्रयास कर सकते हैं। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आंदोलन आरंभ होने से सरकार की आशंका को बल मिला था और वह अतिरिक्त सतर्क हो गई थी। महाराजा नाभा का सन् १९०६ से सन् १९०८ तक का भारत के अंग्रेज गवर्नर जनरल की कौंसिल की सदस्यता का कार्य-काल भी ब्रिटिश सरकार के लिये कोई सुखद अनुभव नहीं रहा था।

अंग्रेजों ने महाराजा को धमकी दी कि वे राज-सिंहासन का त्याग कर दें अन्यथा उन पर न्यायालय में मुकद्दमा चलाया जायेगा, जिससे उनकी प्रतिष्ठा धूल-धूसरित हो जायेगी। सरकार ने महाराजा के सम्बन्धियों और प्रमुख कर्मचारियों को साम-दाम-दंड भेद से अपने पक्ष में कर आवश्यक दस्तावेज भी प्राप्त कर लिये थे। महाराजा रिपुदमन सिंघ को पूर्णत: विवश और असहाय कर दिया गया था। उनके पास अंग्रेजों के सामने समर्पण करने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही नहीं बचा था। शिमला से महाराजा के पास एक अधिकारी मि. ओ. ग्राडी को राजगद्दी छोड़ने का स्वीकृति-पत्र लेने के लिये भेजा गया, ताकि सरकार का पक्ष आरोप-मुक्त रहे। महाराजा को अंग्रेज अधिकारी की बात दबाव में माननी पड़ी। यह बात उन्होंने बाद में वायसराय को लिखे एक पत्र में प्रदर्शित की थी। महाराजा रिपुदमन सिंघ ने अपने पत्र में लिखा था कि अधिकारी ने तुरंत शर्तों की स्वीकृति का पत्र देने को कहा था और धमकी दी थी कि यदि स्वीकृति-पत्र न मिला तो उन्हें बलपूर्वक सेना द्वारा देहरादून ले जाया जायेगा। उस अधिकारी ने अवैध ढंग से नाभा रियासत का शासन हथिया लिया। मि. ग्राडी स्वीकृति-पत्र लेकर तुरंत शिमला चला गया।

सरकार का दावा था कि महाराजा रिपुदमन सिंघ ने स्वयं राजगद्दी से अलग होने की इच्छा व्यक्त की है। सरकार ने महाराजा के प्रस्ताव को निम्न शर्तों के साथ स्वीकार कर लिया घोषित कर दिया :-

१. नाभा रियासत का प्रबंध ब्रिटिश सरकार को स्थांतरित कर दिया जायेगा और महाराजा, रियासत के कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा।

२. जब महाराजा का पुत्र व्यस्क हो जायेगा, तब वे विधिवत नाभा रियासत पर से अपना अधिकार त्याग देंगे।

३. महाराजा नाभा भविष्य में रियासत से बाहर निवास करेंगे। उनके रहने के लिये एक बंगला देहरादून में और एक मसूरी में उपलब्ध कराया जायेगा।

४. महाराजा धार्मिक रस्मों के अतिरिक्त किसी अन्य उद्देश्य से नाभा में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। धार्मिक कार्यों के लिये भी उन्हें अनुमति लेनी होगी।

५. सरकार की अनुमति के बिना महाराजा पंजाब, अमेरिका अथवा यूरोप नहीं जा सकेंगे।

६. नाभा की राजगद्दी के अधिकारी राजकुमार की शिक्षा का दायित्व ब्रिटिश सरकार का होगा।

७. पटियाला रियासत को क्षतिपूर्ति में उतनी रकम देनी होगी जितनी भारत की सरकार निर्धारित करेगी। यह रकम पचास लाख रुपये से अधिक नहीं होगी।

८. महाराजा ब्रिटिश ताज व भारत सरकार की अधीनता में रहेंगे।

९. महाराजा के पारंपरिक अधिकार और सलामी के अधिकार यथावत रहेंगे।

१०. यदि महाराजा इस वचन-पत्र की किसी भी शर्त के पालन में पूरी तरह से असफल रहे तो सरकार को अधिकार होगा कि इस वचन-पत्र को संशोधित अथवा निरस्त कर सके।

यह एक तरह से महाराजा रिपुदमन सिंघ को

राजपाट से अलग कर बंदी बना लेने जैसा था, जिन्हें अपनी रियासत में जाने और स्वतन्त्रता से विचरण करने का अधिकार नहीं था, वे अपने बच्चों की देखरेख करने को स्वतंत्र नहीं थे। सब ब्रिटिश सरकार की इच्छा पर निर्भर हो गया था। उनकी स्वतन्त्रता मात्र दिखावटी और सजावटी ही रह गई थी।

अगले ही दिन प्रातः ९ जुलाई, सन् १९२३ को नाभा रियासत के लिये नियुक्त प्रशासक नाभा आ गया। उसके साथ सेना भी थी, जिसने हीरामहल को चारों ओर से घेर लिया। जब यह कार्रवाई की गई उस समय महाराजा रिपुदमन सिंघ अपने महल, हीरामहल में थे। अकस्मात ऐसे बिना किसी पूर्व सूचना के महाराजा के महल को घेर लेना, ताकि उनकी ओर से किसी तरह का कोई प्रतिरोध न हो सके, किसी साजिश का हिस्सा लग रहा था। इससे यह भी स्पष्ट संकेत प्राप्त हो रहा था कि महाराजा रिपुदमन सिंघ ने स्वयं राजगद्दी नहीं छोड़ी, जैसा कि अंग्रेज शासन द्वारा भ्रम फैलाया गया था। उन पर दबाव डाल कर और धमका कर ऐसा कराया गया था। यह बाद में प्रमाणित भी हो गया था।

उस समय तक मास्टर तारा सिंघ एक बड़े अकाली नेता के रूप में उभर चुके थे। उनकी बात और राय का सिक्खों में बड़ा सम्मान था। मास्टर तारा सिंघ ने स्वयं महाराजा रिपुदमन सिंघ से मिल कर सारी बात जानी थी। मास्टर तारा सिंघ ने इसके उपरान्त अकालियों पर चल रहे एक मुकद्दमे में न्यायालय में बयान देते हुए नाभा का भी उल्लेख किया था और अपने बयान में कहा था कि ''महाराजा ने कहा कि उनको कई तरह की धमकियां दी गई थीं। मुझे ज्ञात था कि उनके विरुद्ध प्रिंस ऑफ वेल्स के ऊपर बम फेंकने की गढ़ी गई साजिश की तरफ यह इशारा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भी इस साजिश में लपेटने की कोशिश की गई थी, मगर एक गवाह ने इस साजिश को नंगा कर दिया था।''

अंग्रेज इतने सतर्क थे कि ९ जुलाई जब उन्होंने महाराजा रिपुदमन सिंघ को महल में घेर लिया तो उन्हें तुरंत देहरादून चले जाने को कहा। देहरादून से उन्हें कोडाईकनाल भेज दिया गया। कोडाईकनाल तमिलनाडु प्रान्त का एक पर्वतीय नगर है, जो समुद्र तल से दो हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस तरह उन्हें पंजाब ही नहीं, उत्तरी क्षेत्र से पूरी तरह से अलग-थलग कर दिया गया, ताकि सरकार की योजना पर कोई सवाल न उठ सके। प्रचार किया गया कि महाराजा स्वयं गवर्नर जनरल के एजेंट कर्नल मिन्चन के पास गये थे और गद्दी छोड़ने की इच्छा व्यक्त की थी। यह भी कहा गया कि महाराजा ने कुछ शर्तें रखी थीं जिन्हें सरकार ने स्वीकार कर लिया। इसके बाद वे नाभा छोड़ देहरादून चले गये। सरकार का यह कुप्रचार टिक नहीं पाया और मास्टर तारा सिंघ के बयान के बाद वास्तविकता उजागर होने लगी। उस समय के समाचार-पत्र 'अकाली ते परदेसी' ने निम्न महत्त्वपूर्ण मुद्दे उठाये :-

१. सरकार ने महाराजा को गद्दी से उतार कर अन्याय किया है।

२. महाराजा की सत्ता संप्रभुता-सम्पन्न थी। अत: जैसे इंग्लैण्ड की महारानी पर किसी अदालत में मुकद्दमा नहीं चलाया जा सकता वैसे ही महाराजा नाभा की स्थिति है।

३. फूलकियां रियासतों और अंग्रेज सरकार के मध्य हुई संधि के अनुसार भी महाराजा नाभा को गद्दी से नहीं उतारा जा सकता।

४. महाराजा एक सच्चे सिक्ख हैं। उन्हें राजनीतिक मतभेदों के कारण ही गद्दी से उतारा गया है। उनके दरबारियों ने भी उनसे विश्वासघात किया है।

इसका उल्लेख पीछे आया है कि अंग्रेजों ने महाराजा नाभा को गद्दी से हटाने से पूर्व उनके दरबारियों और प्रमुख नागरिकों को छल से अपने पक्ष में कर लिया था। इसका उद्देश्य महाराजा को अशक्त और असहाय करना था। २२ नवंबर, १९२३ ई. की एक गुप्तचर रिपोर्ट के अनुसार, महाराजा का ए.डी.सी. आसा सिंघ अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों के साथ महाराजा पटियाला से जा मिला था। इसी तरह प्रदुमन सिंघ ने धोखा कर अनेक फाइलें उपलब्ध कराई थीं, जो महाराजा नाभा के विरुद्ध मुकद्दमे में साक्ष्य के तौर पर दाखिल की गईं।

ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की गईं जो महाराजा रिपुदमन सिंघ के विरुद्ध सिद्ध हुईं और ऐसे दबाव बनाये गये जो उन्हें विवश करने वाले थे। ये दिखाने के दांत थे, जबकि वास्तविक कारण महाराजा का गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को खुला समर्थन, सिक्खों के नेतृत्व वर्ग से मधुर सम्बन्ध और राष्ट्रवादी नेताओं से संपर्क था। महाराजा के भाषण, नीतियां और कार्य अंग्रेज सरकार को कभी नहीं सुहाये थे।

वास्तव में अंग्रेजों के इस कुप्रचार कि महाराजा रिपुदमन सिंघ ने स्वेच्छा से गद्दी छोड़ी है, ने स्वयं ही अंग्रेजों को बेनकाब कर दिया था। कोई भी इस कुप्रचार पर विश्वास करने को तैयार नहीं हुआ था। जो महाराजा कौंसिल में अंग्रेजों को प्रिय न लगने वाले मुद्दे खुल कर उठाते रहे थे, सिक्खों के हित के हर प्रश्न पर न केवल उनके साथ खड़े नजर आते थे बल्कि स्वयं भी ऐसे विषय उठाते रहे थे, जिन्होंने इतनी निर्भीकता प्रकट की हो कि काली पगड़ी और कृपाण जैसे सिक्खों से सीधे सम्बन्धित क़ानून अपने नाभा राज्य में लागू नहीं होने दिये, वे एकाएक इतने असहाय कैसे हो गये कि स्वयं गद्दी छोड़ने की इच्छा प्रकट कर दी हो। अंग्रेजों के पास महाराजा रिपुदमन सिंघ को गद्दी से उतारने और फूलकियां रियासतों से की गई संधि को भंग करने का कोई ठोस कारण नहीं था, इसलिये उन्होंने धमकाने जैसा घटिया हथकंडा अपनाया था।

महाराजा रिपुदमन सिंघ को नाभा की गद्दी से उतारे जाने की आम लोगों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। सरकार का स्वेच्छा से गद्दी त्यागने का कुप्रचार भी टिक न सका। सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध और महाराजा के समर्थन में स्थान-स्थान पर सभायें व विरोध-प्रदर्शन होने लगे। महाराजा रिपुदमन सिंघ के राजगद्दी से उतारे जाने का समाचार मिलते ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एक प्रेस वक्तव्य जारी कर इसे अन्यायपूर्ण कहा था। कमेटी ने यह भी कहा था

कि महाराजा को बड़ी हीनता और अपमान के साथ गद्दी छोड़ने के लिये विवश किया गया है और फौजी शक्ति का प्रदर्शन किया गया है। कमेटी ने पोलिटिकल एजेंट मि. मिन्चन के विरुद्ध इस विषय में सीनाजोरी और तानाशाहीपूर्ण व्यवहार के आरोप भी लगाये। इस वक्तव्य से यह स्पष्ट था कि कमेटी नाभा में घट रही घटनाओं पर बारीक नजर रख रही थी और इस पर उसका मत एकदम स्पष्ट था। अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से अपील की जाने लगी कि वह इस मसले को अपने हाथ में ले। गहन विचार-विमर्श के बाद कमेटी ने यह माना कि महाराजा नाभा को गद्दी से हटाना सिक्खों पर परोक्ष रूप से घात है। इसका विरोध किया जाना चाहिये। कमेटी को हजारों की संख्या में सिक्खों के ज्ञापन प्राप्त हुए थे, जिनमें महाराजा नाभा का समर्थन करने का आग्रह किया गया था। ५ अगस्त, १९२३ ई. को श्री अमृतसर साहिब में हुई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारी समिति की बैठक में महाराजा नाभा रिपुदमन सिंघ के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि ९ सितंबर को सभी स्थानों पर 'नाभा दिवस' मनाया जायेगा। इस दिन नंगे पैर जुलूस निकाले जायेंगे और समागम आयोजित कर महाराजा को न्याय दिलाने के प्रस्ताव पारित किये जायेंगे। यह एक बड़ा ही लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण ढंग था अपनी आवाज सरकार तक पहुंचाने का। यह निर्णय सुविचारित ढंग से किया गया था जो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की नीतियों का आरंभ से ही महत्वपूर्ण अंग था। २९ जुलाई को अरदास दिवस निर्धारित था, जिसमें परमात्मा से महाराजा नाभा की गद्दी पर बहाली की प्रार्थना की जानी थी। लोगों में चेतना जाग्रत करने के लिये अनेक नारे व गीत रचे जाने लगे। ऐसा ही लोकप्रिय नारा था :

उठ जाग कौम होशियार हो जा,
तेरा राजा फकीर हो चल्लिआ ए!

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २ अगस्त को भारत के वायसराय को एक तार भेजा, जिसमें लिखा था कि महाराजा नाभा को अंग्रेज अधिकारियों ने डरा-धमका कर गद्दी से उतारा है। इसकी जांच एक निष्पक्ष कमेटी से कराई जाये। स्वाभाविक ही था कि वायसराय की ओर से इसका कोई संज्ञान नहीं लिया गया और न ही कोई उत्तर दिया गया। अपनी कुटिलता स्वीकार करना आसान नहीं होता। फिर यह तो अंग्रेजों की अहमन्यता का प्रश्न था जो स्वयं को भारतीयों से कहीं श्रेष्ठ मानते थे। वायसराय को इसका एक अनुस्मारक भी तार से भेजा गया, किन्तु वह भी अनुत्तरित रहा। इसके विपरीत सरकार की ओर से नाभा रियासत के लिये एक कौंसिल ऑफ रीजेंसी बनाने का बयान जारी कर दिया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अंग्रेजों की नई चाल समझ गई और इसका विरोध करने का निर्णय ले लिया। नाभा के राज परिवार के सदस्यों और प्रमुख सिक्खों से अपील की गई कि यदि उन्हें इस कौंसिल में सम्मिलित होने का प्रस्ताव मिलता है तो उसे अस्वीकार कर दें।

पूरी घटना पर व्यापक स्तर पर विचार करने

के लिये शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने सामान्य सभा में प्रस्ताव पारित कर सरकार पर आरोप लगाया गया कि उसने पटियाला-नाभा विवाद की आड़ में महाराजा नाभा को रियासत की गद्दी से उतारने का कार्य किया है। सरकारी अधिकारियों द्वारा महाराजा को धमकाना, दबाव डालना बहुत ही अपमानजनक और प्रतिशोध भरा है। कमेटी ने स्पष्ट कहा कि उसे विश्वास है कि ऐतिहासिक व धार्मिक परंपराओं वाली एक सिक्ख रियासत और एक धर्म-पालक व स्वाभिमानी सिक्ख महाराजा पर यह कार्रवाई सिक्ख पंथ पर नियोजित ढंग से किया गया बड़ा प्रहार है। सामान्य सभा के इस प्रस्ताव में कार्यकारी समिति को यह अधिकार दिया गया कि वह महाराजा नाभा को न्याय दिलाने के लिये सभी आवश्यक शांतिपूर्ण व न्यायपूर्ण कदम उठाये। इस प्रस्ताव में महाराजा के साथ संकट की घड़ी में विश्वासघात करने वालों और महाराजा की असहाय स्थिति का लाभ उठाने वालों की कड़ी निंदा की गई। यह एक सम्पूर्ण वक्तव्य था जिससे यह स्पष्ट हो गया कि सिक्ख अंग्रेजों के किसी भी कुप्रचार व धोखे में नहीं आये थे। अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, महाराजा नाभा को अवैध ढंग से राजगद्दी से उतारने के विषय को लेकर पूरी गंभीरता और संकल्प के साथ सामने आ गई थी। अब सारे भ्रम टूट गये थे कि यह एक राजनीतिक प्रकरण है। इसके पीछे का सिक्ख धर्म को दबाने का मनोरथ प्रकट व स्पष्ट हो चुका था। सिक्ख जिस तरह से एक के बाद एक प्रमुख गुरुद्वारों का नियन्त्रण अपने हाथ में लेने में सफल होते जा रहे थे उससे अंग्रेज हतोत्साहित महसूस कर रहे थे। इससे उनके अहं को चोट पहुंच रही थी। किसी भी सरकार की नीतियां कुछ भी हों किन्तु उनके कार्यान्वयन के लिये उसे प्रशासनिक तन्त्र पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रशासन में बैठे लोग समाज से ही आते हैं और समाज के घटनाक्रम व परिवर्तनों से उनका प्रभावित होना स्वाभाविक होता है, इसलिये आवश्यक नहीं होता कि किसी सरकार की नीतियां शब्दशः आकार ले सकें। पंजाब में भी ऐसा ही कुछ देखने को मिल रहा था। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आंदोलन जिस भावना और संकल्प के साथ चलाया जा रहा था उसका प्रभाव विशेष रूप से सिक्ख अधिकारियों के मानस पर भी पड़ रहा था। उनके हाथ यद्यपि कर्तव्यों से बंधे हुए थे, फिर भी वे अकालियों और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से सहानुभूति रखने लगे थे। देशभक्त अधिकारी गोपनीय सरकारी सूचनायें, फाइलें सिक्खों को उपलब्ध कराने लगे थे। प्रोफेसर तेजा सिंघ ने अपनी पुस्तक 'ट्रुथ अबाउट नाभा' इन्हीं फाइलों और सूचनाओं की सहायता से लिखी थी, जिसे बाद में प्रमाणिक सन्दर्भ के तौर पर अनेक लेखकों ने प्रयुक्त किया। प्रोफेसर तेजा सिंघ के अनुसार, जो गुप्त कोड वाला तार महाराजा नाभा को गद्दी से उतारने के सम्बन्ध में भेजा गया था वह भी सिक्खों के हाथ लग गया था। जब यह प्रकट कर दिया गया कि सरकार ने महाराजा नाभा को बलपूर्वक राजगद्दी से उतारा है तो सरकार ने अपने पक्ष को सुदृढ़ करने के लिये कर्नल मिन्चन को देहरादून भेजा कि वह

महाराजा नाभा से एक पत्र प्राप्त करे कि उन्होंने स्वेच्छा से गद्दी का त्याग किया है।

इससे स्पष्ट था कि सरकार से महाराजा को कोई न्याय नहीं प्राप्त होने वाला था और उन्हें सोच-समझ कर निहित कारणों से गद्दी से उतारा गया था जिसे स्वेच्छा का आवरण पहना कर स्वयं को सही ठहराया जा रहा था। अंग्रेज अधिकारी इसके लिये किसी भी सीमा तक जा सकते थे। इधर सिक्ख भी पूर्णत: सतर्क थे और बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लेकर सरकार को उसी के दांव से परास्त करने के लिये कमर कस चुके थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी खुलकर महाराजा नाभा के समर्थन में आ चुकी थी और इसे सिक्ख हितों पर कुठाराघात के रूप में देख कर संघर्ष के लिये तैयार नजर आ रही थी। कमेटी द्वारा विरोध के कार्यक्रम की घोषणा की जा चुकी थी। लोग भी इस प्रश्न पर जागरूक होने लगे थे। उनकी सरकार के विरुद्ध भावनायें उभरने लगी थीं। नाभा के महाराजा रिपुदमन सिंघ देहरादून में थे। उनके स्थान पर सरकार द्वारा नियुक्त प्रशासक नाभा रियासत का शासन-भार संभाल रहा था। नाभा के अंग्रेज प्रशासक ने सरकार के विरुद्ध उभर रहे आक्रोश और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा घोषित आन्दोलन कार्यक्रम को देखते हुए तुरंत कुछ कदम उठाये। महाराजा नाभा की गद्दी से सम्बन्धित प्रश्न पर विचार करने वाली राजनीतिक सभाओं को निषेध कर दिया गया। इसके विपरीत सिक्खों की योजना तो पूरे राज्य में स्थान-स्थान पर सभायें करने और लोगों को जागरूक करने की थी। इसमें अन्य कार्यक्रमों के साथ ही महाराजा नाभा को, वे जहां भी निवास कर रहे हों, तार भेज कर अपना समर्थन व्यक्त करने की भी योजना थी। इस प्रकार आम लोगों को भावनात्मक रूप से इस आन्दोलन से जोड़ने की कुशल रणनीति बनाई गई थी। महाराजा रिपुदमन सिंघ मात्र नाभा के महाराजा न रह कर सिक्ख हितों के प्रतीक बन गये थे। राजगद्दी के राजनीतिक प्रश्न को सिक्ख हितों का प्रश्न बना देना तत्कालीन सिक्ख नेतृत्व की दक्षता और सामर्थ्य का सुंदर उदाहरण है। सारा आन्दोलन बड़े ही धैर्य और संयम के साथ आगे बढ़ने जा रहा था। अकाली जत्थे पहले ही पूरे पंजाब में स्थापित हो चुके थे। नाभा रियासत के अकाली जत्थे ने घोषणा की कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा एक दीवान (समागम) का आयोजन नाभा में किया जायेगा, जिसका प्रबंध नाभा का अकाली जत्था करेगा। इस समय नाभा रियासत अकाली जत्थे के जत्थेदार भाई अरूर सिंघ थे और जैतो क्षेत्र के जत्थेदार भाई बसंत सिंघ थे। अकाली जत्थों ने जब लोगों से आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया तो नाभा के प्रशासक ने चेतावनी दे दी कि जो लोग अकालियों का समर्थन करेंगे, उनकी सम्पत्तियां जब्त कर ली जायेंगी और उन्हें रियासत से बाहर कर दिया जायेगा, मगर उसकी इस चेतावनी का सिक्ख आक्रोश पर किंचित्-मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा।

-'विश्व का विस्मय : जैतो का मोर्चा'

पुस्तक से आभार सहित।

नाभा रियासत का इतिहास

*-डॉ. गुरप्रीत सिंघ**

अठारहवीं सदी का सिक्ख इतिहास *''हन्नै हन्नै मीरी''* का इतिहास है। हन्नै हन्नै मीरी का आशीर्वाद सिक्खों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुआ था :

हम पतिशाही सतिगुर दई हन्नै हन्नै लाइ।
जहिं जहिं बहैं ज़मीन मल,
तहिं तहिं तख़त बनाइ।।[१]

इस 'हन्नै हन्नै मीरी' में से ही सिक्ख मिसलें बनीं। माझा के क्षेत्र में सिक्खों की ग्यारह मिसलें अस्तित्व में आईं। बारहवीं फूलकिया मिसल गुरु ख़ालसा पंथ का सदका मालवा क्षेत्र में बनी :

साखी सुनो फिर मलवईअन,
जिम पंथ उपरालो कीन।
फूलाइण बाधो भयो,
कर दौर मुलक मल लीन।।[२]

सिक्खों की इन बारह मिसलों में से फूलकिया मिसल एक ऐसी मिसल थी जिसने तीन रियासतों- पटियाला, नाभा और जींद को जन्म दिया। इन तीनों रियासतों का पूर्वज चौधरी फूल था। ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार चौधरी फूल मालवा क्षेत्र का सिद्धू जट्ट था। चौधरी फूल की पीढ़ी राजपूताना के निवासी राजा जैसल (जैसलमेर शहर बसाने वाला) की तीसरी पीढ़ी में से भट्टी राजपूतों के ख़ानदान में से था।[३] राजा जैसल का पुत्र भीम मल्ल था। भीम मल्ल का पुत्र जोधर राव, जोधर राव का पुत्र मंगल राव, मंगल राव का पुत्र खीवा राव, खीवा राव का पुत्र सधू था, जिससे सिद्धू गोत्र चली। सिद्धू की पीढ़ी में से संघर हुआ। संघर का पुत्र बीरम था, जो बाबर के समय मालवा क्षेत्र का चौधरी बना। बीरम का पुत्र मेहराज था। मेहराज का पुत्र सतू और सतू का पुत्र पक्खू चौधरी बना। पक्खू का पुत्र मोहन था। यह मोहन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का सिक्ख बना और श्री गुरु हरिराय साहिब की कृपा से इसने 'मेहराज' नामक नगर बसाया।[४] मोहन के दो पुत्र-- रूप चंद और काला थे। मोहन अपने पुत्र रूप चंद सहित अपने असली गाँव बेदोवाली को भट्टियों से छुड़वाते वक्त मारा गया था। रूप चंद के दो लड़के थे -फू ल और संदली। १६४५ ई. में श्री गुरु हरिराय साहिब जब मालवा क्षेत्र में गए तो काला चौधरी अपने भतीजों-- फूल और संदली को गुरु जी के पास लेकर आया। इन बच्चों द्वारा अपने पेट पर हाथ मारने का कारण पूछ कर, गुरु जी ने फूल और संदली को राज-सत्ता का आशीर्वाद दिया।[५] यह चौधरी फूल ही फूलकिया रियासत का संचालक बना, जिससे आगे पटियाला, नाभा और ज़ीद रियासतें वजूद में आईं। चौधरी फूल का बड़ा पुत्र तिलोका

* धार्मिक अध्यापक, श्री गुरु रामदास पब्लिक हाई स्कूल, गोल्डन टैंपल कालोनी, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ८७२५०-१५१६३.

(तिलोक सिंघ) था। यही तिलोका नाभा ख़ानदान का पूर्वज था। चौधरी फूल का अकाल प्रस्थान १६९० ई. में हुआ। उसकी जगह तिलोका चौधरी बना। चौधरी तिलोका कलगीधर पातशाह जी का सिक्ख था, जिसने श्री अनंदपुर साहिब के युद्धों में भाग लिया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसे एक हुकमनामा और कटार भेजी थी। ज्ञानी गिआन सिंघ अनुसार, चमकौर की जंग में शहीद हुए बड़े साहिबज़ादों के शरीरों के दाह-संस्कार भाई तिलोक सिंघ और इनके भ्राता भाई राम सिंघ ने किया था।[६] भाई तिलोक सिंघ का अकाल प्रस्थान १७२९ ई.में हुआ था। भाई तिलोक सिंघ के दो पुत्र थे-- गुरदित्त सिंघ और सुखचैन सिंघ। सुखचैन सिंघ जींद रियासत का पूर्वज था और गुरदित्त सिंघ नाभा रियासत का पूर्वज था। गुरदित्त सिंघ के घर सूरतिआ सिंघ ने जन्म लिया। गुरदित्त सिंघ और सुखचैन सिंघ दोनों भाइयों का राजगद्दी को लेकर तथा बाद में क्षेत्र-विभाजन को लेकर झगड़ा चलता रहा। गुरदित्त सिंघ ने उजड़े हुए संगरूर को पुनः आबाद कर अपनी राजधानी बनाया। १७५२ ई. में धनौला गाँव में गुरदित्त सिंघ का पुत्र सूरतिआ सिंघ का निधन हो गया।[७] १७५४ ई. में गुरदित्त सिंघ का भी देहांत हो गया तो राजगद्दी पर गुरदित सिंघ का पोता हमीर सिंघ बैठा। सूरतिआ सिंघ के दो लड़के थे-- हमीर सिंघ और कपूर सिंघ। इन दोनों भाइयों ने बाबा आला सिंघ के साथ मिल कर बहुत उन्नति की। हमीर सिंघ ने लाहोवाली, नाभियन और भमदी गाँवों के मध्य एक जगह तलाश कर कार्तिक सुदी १६, संवत् १८१६ (१७५९ ई.) को एक किले की नींव रखी और इस किले का नाम 'नाभा' रख कर इसको अपनी राजधानी बनाया।[८] इसी नाभा किले के इर्द-गिर्द नाभा शहर और नाभा रियासत अस्तित्व में आई थी।

दिसंबर, १७८३ ई. में राजा हमीर सिंघ का निधन हुआ तो उसका आठ वर्षीय पुत्र जसवंत सिंघ राजा बना। राजा जसवंत सिंघ के महाराजा रणजीत सिंघ के साथ बढ़िया सम्बन्ध थे और ये दोनों एक-दूसरे के मददगार भी रहे थे। राजा जसवंत सिंघ का देहांत २२ मई, १८४० ई. को हुआ। इसके बाद इसका अठारह वर्षीय पुत्र देविंदर सिंघ नाभा रियासत का राजा बना।[९] १५ अक्तूबर, १८४० ई.को देविंदर सिंघ की ताजपोशी हुई थी। अंग्रेज़ों के साथ नाभा रियासत की हुई संधि के मुताबिक जब सिक्खों व अंग्रेज़ों की सिक्ख एंग्लो वार फेरू शहर में हुई तो राजा देविंदर सिंघ ने अंग्रेज़ों की मदद करने में ढील की, जिस कारण अंग्रेज़ इसके विरुद्ध हो गए। लड़ाई के बाद अंग्रेज़ों ने राजा देविंदर सिंघ को गद्दी से उतार कर इसकी जगह इसके नाबालिग पुत्र भरपूर सिंघ को राजा बना दिया। राजा देविंदर सिंघ को पेन्शन देकर मथुरा भेज दिया । फिर ८ दिसंबर, १८५५ ई. को मथुरा से लाहौर लाया गया, जहाँ नवंबर १८६५ ई. में राजा देविंदर सिंघ की मृत्यु हो गई।[१०] भरपूर सिंघ के तख़्त पर बैठते समय उसकी आयु सात वर्ष थी, इसलिए कौंसिल आफ रेजंसी बनाई गई। १८५७ ई. के ग़दर में जलंधर और फिलौर में बागियों के विरुद्ध अंग्रेज़ों की मदद करने के बदले राजा भरपूर सिंघ

को नाभा स्टेट के ज़ब्त किये हुए इलाके वापस मिल गए। राजा भरपूर सिंघ को अंग्रेज़ सरकार की तरफ से ग़दर के समय की गई मदद के बदले पंद्रह वस्त्रों की ख़िलअत और ग्यारह तोपों की सलामी मंजूर हुई। इसके अलावा कुछ ख़िताब भी मिले, जैसे 'फरजन्दे अर्जमंद अकीदत पैवंद दौलत इंगलिसिया बैराड़ बंस','सरमौर मालवेंदर बहादर राजा भरपूर सिंघ' आदि। इसी समय नाभा रियासत को दत्तक बनाने के अधिकार भी दिए गए थे।[११] राजा भरपूर सिंघ के अंग्रेज़ सरकार के साथ अति घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। यह राजा ९ नवंबर, १८६३ ई. को बुख़ार द्वारा बीमार होकर अकाल प्रस्थान कर गया। राजा भरपूर सिंघ नि:संतान मर गया। उसके बाद उसका छोटा भाई भगवान सिंघ नाभा रियासत का राजा बना, जिसे १७ फरवरी, १८६४ ई. को राजगद्दी पर बिठाया गया।[१२] राजा भगवान सिंघ अपने भाई राजा भरपूर सिंघ की भांति बड़ा लायक राजा था। इसने लगभग छ: वर्षीय नाभा रियासत को संभाला। इसकी मृत्यु १८७० ई, में ज्येष्ठ वदी १२ को हुई।[१३] राजा भगवान सिंघ भी नि:संतान था।

राजा भगवान सिंघ की मृत्यु के पश्चात् मई, १८६० ई. की शर्तों के अनुसार रियासत नाभा का राजा फूल वंश में से चुनना पड़ा। दीवान हाकिम राय नाभा ने प्रभु दयाल मीर मुंशी की लिखित और कुर्सीनामे के अनुसार स. हीरा सिंघ बडरुक्खां वाले को योग्य और हकदार समझकर, रियासत नाभा के सभी अहलकारों के हस्ताक्षर करवा रखे थे। लेफ्टिनेंट गवर्नर पंजाब ने स. हीरा सिंघ को शिमला बुला कर नाभा रियासत के बारे में जानकारी दी और नाभा का राजा एलान दिया। साथ ही स. हीरा सिंघ से कहा कि आज से बडरुक्खां में से आप मर गए और राजा भगवान सिंघ के घर आपका जन्म हो गया है। १० अगस्त, १८७१ ई. को स. हीरा सिंघ को नाभा का राजा बनाया।[१४] स. हीरा सिंघ ने नाभा रियासत का प्रबंध बहुत बढ़िया तरीके से चलाया। रियासत में अनेक विद्यालय खोले और विद्यार्थियों को अनेक वज़ीफ़े दिए। मैकालिफ को 'सिक्ख रिलीजन' किताब लिखने के लिए भारी सहायता प्रदान की और खालसा कॉलेज को सुदृढ़ किया। इसकी मृत्यु २५ दिसंबर, १९११ ई. को हुई।[१५] राजा हीरा सिंघ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रिपुदमन सिंघ नाभा रियासत का राजा बना। इसने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपनी फ़ौज की सेवा अंग्रेज़ सरकार को सौंपी। सरकार ने १९१८ ई. में नाभा रियासत की अकाल इन्फेंटरी मेसोपोटामिया भेजी थी, जहाँ इस फ़ौज ने सरदार बहादुर करनैल बचन सिंघ की कमान के नीचे बहुत बढ़िया काम किया। १९१९ ई. में नाभा रियासत की फ़ौज ने तृतीय अफगान युद्ध के समय बलोचिस्तान और ईरान में रहकर भी उत्तम सेवा की। महाराजा रिपुदमन सिंघ के घर २१ सितंबर, १९१९ ई. को टिक्का प्रताप सिंघ ने जन्म लिया। इन्ही दिनों नाभा रियासत के प्रशासनिक ढांचे में गैर-कर्मचारी लोग शामिल हो गए, जिस कारण इनके पटियाला रियासत के साथ व्यर्थ के कई झगड़े पैदा हो गए।[१६] इन झगड़ों के कारण अंग्रेज़ हुकूमत ने ९ जुलाई, १९२३ ई. को महाराजा रिपुदमन सिंघ को राजगद्दी से जबरन

हटा दिया। रियासत की तरफ से तीन लाख रुपया मुकर्रर होकर देहरादून रहने की सरकार की तरफ से आज्ञा हुई। इस समय नाभा रियासत के प्रबंध के लिए अंग्रेज़ प्रबंधक नियुक्त किया गया। ६ फरवरी, १९२७ ई. को महाराजा रिपुदमन सिंघ ने श्री हजूर साहिब नांदेड़ से अमृत छक कर नाम 'गुरचरन सिंघ' रखा। १९२८ ई. में अंग्रेज़ सरकार की तरफ से महाराजा रिपुदमन सिंघ पर शर्तों की पालना न करने का दोष लगाकर उनका गुज़ारा भत्ता तीन लाख रुपए से घटा कर एक लाख बीस हज़ार रुपए कर उनसे महाराजा की पदवी छीन कर उन्हें तमिलनाडू के क्षेत्र कोडाईकनाल भेज दिया। इस समय २३ फरवरी, १९२८ ई. को गवर्नर जनरल के एजेंट ने देहरादून पहुँच कर टिक्का प्रताप सिंघ को नाभा का महाराजा एलान कर दिया।[१७] टिक्का प्रताप सिंघ के बालिग़ होने तक अंग्रेज़ सरकार द्वारा नियुक्त प्रबंधक १९३८ ई. तक कार्य करता रहा। महाराजा रिपुदमन सिंघ कोडाईकनाल में १३ दिसंबर, १९४२ ई. को अकाल प्रस्थान कर गए। इनके पुत्र टिक्का प्रताप सिंघ को अंग्रेज़ सरकार ने देहरादून में ही रखा, जहाँ से उच्च विद्या प्राप्त करवाने के बहाने इंग्लैंड भेज दिया।[१८] महाराजा टिक्का प्रताप सिंघ १९४८ ई. तक नाभा रियासत का राजा रहा। १९४८ ई. में नाभा रियासत को पंजाब की अन्य रियासतों सहित 'पैपसू' में शामिल कर दिया गया। १ नवंबर, १९५६ ई. के दिन पंजाब और पैपसू के राज्यों को मिला कर पंजाब राज्य बना दिया गया। इसके साथ नाभा रियासत का अपने क्षेत्रीय, राजसी अस्तित्व ख़त्म हो गया।

संदर्भिका :

१. स. रतन सिंघ (भंगू), श्री गुर पंथ प्रकाश, सम्पा., डॉ. जीत सिंघ सीतल, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ २८५.

२. उक्त, पृष्ठ ५७७.

३. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग द्वितीय, भाषा विभाग पंजाब, २००३, पृष्ठ ५४१.

४. उक्त, पृष्ठ ५४२-५४४.

५. उक्त, पृष्ठ ५४६.

६. उक्त, पृष्ठ ६२७-६२८.

७. ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सिक्ख मिसलां ते सरदार घराणे, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, २०१२, पृष्ठ ११८.

८. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग द्वितीय, पृष्ठ ६२९

९. ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सिक्ख मिसलां ते सरदार घराणे, पृष्ठ १२०.

१०. उक्त, पृष्ठ १२०.

११. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग द्वितीय, पृष्ठ ६४६.

१२. उक्त, पृष्ठ ६५३.

१३. उक्त, पृष्ठ ६५७.

१४. उक्त, पृष्ठ ६५८.

१५. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, नेशनल बुक शॉप, दिल्ली, २००६, पृष्ठ २७७.

१६. उक्त, पृष्ठ ६९६

१७. उक्त।

१८. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्वकोश, भाग द्वितीय, पृष्ठ १५३५.

जैतो के मोर्चे से संबंधित प्रस्ताव

*-डॉ. रणजीत कौर पंनवां**

गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ के पास होने के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के कैदियों को रिहा करवाने, पेन्शन लगवाने के लिए प्रस्ताव पारित किए गए जो 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा पंजाह साला इतिहास' में प्रकाशित हुए थे। इन प्रस्तावों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि रियासतों के सदस्य सिक्ख कैदियों की रिहाई के प्रस्ताव पर राय भी नहीं देते थे और हस्ताक्षर भी नहीं करते थे। इस आलेख में दिए सभी प्रस्ताव स. शमशेर सिंघ अशोक द्वारा संपादित पुस्तक 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा पंजाह साला इतिहास' में से लिए गए हैं।

प्रथम कार्यकारी समिति : २ अक्तूबर, सन् १९२६ को एक बजे गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड की सभा मास्टर तारा सिंघ की अध्यक्षता में आरंभ हुई, जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया :-

सिक्ख कैदियों की रिहाई के संबंध में प्रस्ताव

फिर स. बूटा सिंघ ने निम्नलिखित गुरमता पेश किया :-

''गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड की यह सभा सरकार पर बड़ा ज़ोर देती है कि पंथ के आशय के अनुसार गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के सभी कैदियों को रिहा किया जाये। जिन्हें किसी प्रकार से भी सरकार की निष्ठुरता की नीति के कारण गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में नुकसान पहुँचा हो, वो पूरा किया जाये। जब तक सभी कैदी रिहा नहीं किये जाते, तब तक सिक्ख कौम में शान्ति होना असंभव है।''

इस गुरमते की ताईद स. अवतार सिंघ ने की। स. तेजा सिंघ रियासत नाभा ने कहा कि रियासती कैदी भी स्पष्ट रूप से इसमें शामिल किये जाएँ। स. बूटा सिंघ ने यह तजवीज़ स्वीकार कर ली। फिर स. महिंदर सिंघ ने तरमीम की कि इसमें सन् १९१३ से लेकर अकाली लहर तक के कैदी शामिल किये जाएँ। यह तरमीम भी स. बूटा सिंघ ने कर दी।

बाद में स. महिताब सिंघ इस गुरमते में जितनी तरह के नुकसान सिक्खों के हुए हैं, वे अलग-अलग कर लिखवाना चाहते थे, परन्तु इस बात की विरोधता हुई और स. महिताब सिंघ ने अपनी यह तरमीम वापस ले ली।

फिर स. हरबंस सिंघ सीसतानी ने इस

** इंचार्ज, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९८१४८-५१५१३*

गुरमते में और तरमीम पेश की कि इस प्रस्ताव में 'बड़ा ज़ोर देती है' के स्थान पर 'मुतालबा करती है' लिखा जाये। इस तरमीम की ताईद स. गुरदित्त सिंघ बहलोलपुरी ने की। इस तरमीम पर कुछ देर चर्चा हुई और फिर यह तरमीम भी स. हरबंस सिंघ ने वापस ले ली।

इसके बाद यह तरमीम किया हुआ गुरमता इस शक्ल में तबदील होने पर सर्वसम्मति के साथ पारित हो गया। वह तरमीमशुदा गुरमता इस प्रकार है :--

''गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड की यह सभा सरकार पर बड़ा ज़ोर देती है कि पंथ के आशय के अनुसार गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के १९१३ से लेकर सभी कैदियों को रियासती कैदियों सहित रिहा किया जाये और उन सभी सज्जनों की शिकायतों को दूर किया जाये जिन्हें किसी तरह की कठोरता की नीति के कारण गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में नुकसान पहुँचा हो। जब तक सभी कैदी रिहा न किये जाएँ, सिक्ख कौम में शान्ति होना असंभव है।''

सिक्ख कैदियों को बधाई : फिर स. मंगल सिंघ ने गुरमता पेश किया और इसकी ताईद स. जसवंत सिंघ झबाल ने की :-

''सेंट्रल बोर्ड की यह सभा उन शूरवीरों को, जो गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में कैद होकर अब तक पंथ की आन-शान कायम रखने की ख़ातिर जेलों में बैठे हैं और जिन्होंने सरकार की तरफ से लगाई गई ज़लील शर्तें मान कर रिहा होना स्वीकार नहीं किया, उन्हें सच्चे दिल से बधाई देती है।''

इस गुरमते पर गर्मागर्म बहस हुई और बहुसम्मति के साथ गुरमता पास हो गया।

उपरोक्त दोनों गुरमतों से सम्बन्धित सिक्ख रियासतों के सदस्यों द्वारा निम्नलिखित चिट्ठी नोट करने के लिए बाद में पहुँची :-

Mr. President,

The Eleven State members present here not voted on this and the previous resolution, which fact may please be brought on the record.

Arjan Shah Singh
for Sikh State Members.

अर्थात् :

प्रधान साहिब,

रियासतों की तरफ से जो ग्यारह सदस्य यहाँ उपस्थित थे, उन्होंने इस प्रस्ताव पर और इससे पहले प्रस्ताव पर अपनी राय नहीं दी। कृप्या यह बात रिकार्ड में नोट कर लेना जी !

हस्ताक्षर /-
अरजन शाह सिंघ,
हेतु सदस्य सिक्ख रियासतें।[१]

अकाली कैदियों की रिहाई का प्रस्ताव : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की १३ मार्च, १९२७ ई. की साधारण सभा की नयी कार्यवाही आरंभ हुई। प्रधान साहिब ने कहा कि आज की कार्यवाही में सबसे पहले कैदियों की रिहाई का मामला पेश होगा जिससे कार्यकारी समिति का सर्वसम्मति के

साथ पारित हुआ प्रस्ताव स. मंगल सिंघ पेश करेंगे। स. मंगल सिंघ ने निम्नलिखित प्रस्ताव पेश कर एक पुरज़ोर तकरीर की : --

''शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की यह साधारण सभा बड़े ज़ोर के साथ नोट करती है कि सरकार ने अभी तक कैदियों की रिहाई और गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर से सम्बन्धित सिक्खों पर आई मुश्किलों को दूर करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की, चाहे सिक्ख कौम ने पूरे देश में अखबारों और दीवानें के माध्यम से तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सर्वसम्मति के साथ २ अक्तूबर, सन् १९२६ को पास किये गुरमते के माध्यम से अपने गहरे दिली दुख को अच्छी तरह से प्रकट कर दिया है।''

''स्वीकार हुआ कि गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के कैदियों की रिहाई और सिक्खों की अन्य मुश्किलों के निवारण का मामला विचारने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की एक विशेष सभा ३ अप्रैल, १९२७ ई. को बुलाई जाए।''

इस प्रस्ताव की ताईद स. हीरा सिंघ नारली और ताईद मजीद स. अमर सिंघ संपादक 'शेरे-पंजाब' (उर्दू) साप्ताहिक ने की।

इस प्रस्ताव के पिछले भाग पर सभा की तारीख़ नियत करने से सम्बन्धित थोड़ा-सा मतभेद होने के कारण कई सदस्यों द्वारा से तकरीर की गई। अंत में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति के साथ स्वीकार किया गया।

इस प्रस्ताव पर यह विचार हो ही रही थी कि प्रधान साहिब को निम्नलिखित पर्ची नोट करने के लिए दी गई :-

अर्थात् इस प्रस्ताव पर निम्नलिखित सदस्यों ने अपनी राय नहीं दी :-

१. स. अरजन शाह सिंघ पटियाला
२. स. किशन सिंघ कपूरथला
३. स. हीरा सिंघ नाभा
४. स. तारा सिंघ फरीदकोट
५. स. बावा सुंदर सिंघ फरीदकोट
६. स. शेर सिंघ जींद

इस प्रस्ताव के पारित होने पर प्रधान साहिब ने बताया कि कैदियों की रिहाई से सम्बन्धित बाकी के प्रस्ताव विशेष सभा के लिए मुलतवी किये जाते हैं।

अकाली कैदियों की रिहाई और कौंसलरों के इस्तीफे : ३ अप्रैल, १९२७ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की इस साधारण सभा में प्रधान साहिब मास्टर तारा सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब (श्री अमृतसर साहिब) और तख्त श्री केसगढ़ साहिब (श्री अनंदपुर साहिब) के बजट के साथ ही अकाली कैदियों की रिहाई के बारे में विचार पेश किए :-

(अ) आज ३ अप्रैल, १९२७ ई. की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की यह जनरल सभा पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल,

लेजिस्लेटिव असेंबली और कौंसिल ऑफ स्टेट के चुने हुए सिक्ख सदस्यों से माँग करती है कि वे सरकार के इस रवैये पर रोष प्रकट करते हुए उक्त लेजिस्लेटरों में से इस्तीफा दे दें, जो सरकार ने पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल में २१-३-२७ को गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के कैदियों की रिहाई से सम्बन्धित पारित प्रस्ताव पर प्रयोग न करने में इख्तियार किया है।

(आ) यह सभा यह भी स्वीकार करती है कि इस प्रकार इस्तीफ़ा देने वाले सदस्य अपनी इस कार्यवाही की पुष्टि में अपने आप मतदाताओं की स्वीकृति लेने के लिए नए चुनाव के समय अपने-अपने क्षेत्र में से पुन : उम्मीदवार खड़े हों। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एलान करती है कि ऐसे इस्तीफ़ा देने वाले सदस्य पंथक उम्मीदवार हैं और कमेटी पंथ से आशा रखती है कि दूसरी बारी खड़े होने पर इनकी हर प्रकार से सहायता कर साबित कर दे कि वह उक्त रोष में सम्मिलित है।

इस प्रस्ताव की ताईद स. महिंदर सिंघ तथा ताईद मजीद बाबा गुरदित्त सिंघ ने की और ज्ञानी शेर सिंघ ने यह प्रस्ताव सर्वसम्मति के साथ पास करने की राय दी। . . .

इस प्रस्ताव पर रियासती सदस्यों ने कोई राय न दी और बाकी सदस्यों ने यह प्रस्ताव सर्वसम्मति के साथ पास कर दिया।२

सन् १९२८ की प्रथम सभा : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की वर्ष की प्रथम साधारण सभा जो तारीख़ १० मार्च, सन् १९२८ मुताबिक २८ फाल्गुन, संवत् ४५९ नानकशाही को श्री अकाल तख़्त साहिब के स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में हुई। कुल सदस्य, जो इस सभा में शामिल हुए, ७५ थे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सन् १९२८-२९ के बजट पर विचार हुई और अहम प्रस्ताव पारित हुए। दूसरा, तीसरा प्रस्ताव मोर्चों के कैदियों तथा महाराजा नाभा के संबंध में पारित हुआ।

अकाली कैदियों की रिहाई के संबंध में प्रस्ताव : फिर प्रोटेस्ट के तौर पर निम्नलिखित गुरमता प्रधान साहिब की तरफ से पेश होने पर सर्वसम्मति के साथ पास हुआ। इस गुरमते की नकल यह है :-

''अभी तक गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के कैदी सरकारी और रियासती जेलों में बंद हैं। गुरुद्वारा एक्ट को पास हुए ढाई वर्ष से अधिक समय हो गया है और अब तक गुरुद्वारा कैदियों को जेलों में बंद रखना सरकार की कपट भरी नीति प्रकट करता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सरकार के प्रति इस नीति के विरुद्ध बहुत रोष प्रकट करती है और जेलों में कैद धर्मी वीरों को पंथ के सम्मान की खातिर डटे रहने पर बधाई देती है।''

रियासती सदस्यों ने इस गुरमते के संबंध में

वोट नहीं दी।

महाराजा नाभा के संबंध में सहानुभूति का प्रस्ताव

महाराजा नाभा के संबंध में निम्नलिखित सहानुभूति का प्रस्ताव कार्यकारी समिति द्वारा स. जसवंत सिंघ दानेवालिया ने पेश किया और स. मान सिंघ सरगोधा ने इसकी ताईद की :-

''शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की इस साधारण सभा को श्री हजूर महाराजा गुरचरन सिंघ[३] साहिब मालविंदर बहादुर जीओ नाभा को उनके ख़िताब आदि छीन कर, वज़ीफ़ा घटा कर नज़रबंद करने पर, घोर कष्ट पहुँचा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी महाराजा साहिब और उनके परिवार के साथ इस दुख के समय पूर्ण सहानुभूति प्रकट करती हुई श्री अकाल पुरख के समक्ष विनती करती है कि वह महाराजा साहिब व उनके परिवार को बल प्रदान करे और यह कष्ट जल्द ही दूर करे।''

सहानुभूति के इस प्रस्ताव और बहस के समय सरदार अरजन शाह सिंघ पटियाला ने प्रधान जी से फ़ैसला (Ruling) माँगा और इस प्रस्ताव के साथ गुरुद्वारा एक्ट दफ़ा- १२९ का उल्लंघन होता बता कर एतराज़ प्रकट किया, मगर प्रधान जी ने फ़ैसला दिया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस सिक्ख महाराजा के साथ सहानुभूति प्रकट करती है, इसलिए दफ़ा- १२९ का उल्लंघन नहीं होता। फिर मतदान के बाद यह प्रस्ताव बहुसम्मति के साथ पास हो गया। सरदार बखशीश सिंघ ने अपनी राय इस प्रस्ताव के विरुद्ध दर्ज करवाई[४]

जैतो का शहीदी दिन मनाए जाने संबंधी प्रस्ताव : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब की तीसरी साधारण सभा तारीख़ १ सावन, संवत् ४५९ नानकशाही मुताबिक १५ जुलाई, १९२८ ई. को दिन के बारह बजे श्री अकाल तख़्त साहिब के स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हज़ूरी में मास्टर तारा सिंघ की अध्यक्षता में आरंभ हुई, जिसमें लगभग सभी जिलों और रियासतों के कुल ९१ सदस्य, सिक्ख रहु-रीति (आचरण संहिता) सब-कमेटी के ६ सदस्य और ज्ञानी नाहर सिंघ गुजरांवालिया पत्रकार आदि शामिल थे। अरदास कर कार्यवाही शुरू होने पर कुछ ख़ास प्रस्ताव निम्नलिखित के अनुसार पास हुए, जिनमें ये भी दो मुख्य प्रस्ताव थे :-

जैतो का शहीदी दिन मनाए जाने संबंधी : कार्यकारी समिति के गुरमता नंबर २६८, तारीख़ १४-७-१९२८ के अनुसार स. जसवंत सिंघ की तजवीज़, ज्ञानी करतार सिंघ की ताईद पर निम्नलिखित प्रस्ताव पेश हुआ और सर्वसम्मति के साथ स्वीकार हुआ :-

''शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का आज का जनरल इजलास कार्यकारी समिति

को अधिकार देता है कि कमेटी शहीदी के दिन जैतो के शहीदों की यादगार में गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो में शहीदी दिन मनाने का प्रबंध करे।''[५]

इसी तीसरी साधारण सभा में माई किशन कौर काउंके की पेन्शन के संबंध में प्रस्ताव पास हुआ।

माई किशन कौर काउंके की पेन्शन का केस

फिर स. रणधीर सिंघ काउंके की पत्रिका पेश होने पर फ़ैसला हुआ कि माई किशन कौर ने अकाली लहर के दिनों में गुरुद्वारा गुरु का बाग और जैतो के मोर्चे के समय जेलों की यातनाएं सहन कर गुरु-पंथ की बहुत ख़िदमत की है, इसलिए उसकी पेन्शन का मामला कार्यकारी समिति के सुपुर्द किया जाये।[६]

सिक्ख कैदियों की रिहाई का प्रस्ताव : चौथी साधारण सभा २८ अक्तूबर, १९२८ ई. को मास्टर तारा सिंघ की अध्यक्षता में हुई, जिसमें तीसरा प्रस्ताव सिक्ख कैदियों की रिहाई के संबंध में पास किया गया :-

सरदार अमर सिंघ शेरे-पंजाब की तजवीज़ और ज्ञानी शेर सिंघ की ताईद के साथ स्वीकार हुआ कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का यह जनरल समागम सरकार की इस पालिसी की सख़्त निंदा करता है कि उसने अभी तक गुरुद्वारा कैदियों को रिहा नहीं किया। यह समागम उन अकाली शूरवीरों की सेवा की प्रशंसा करता है, जो पंथ के सम्मान के लिए अपने प्रण पर बराबर डटे हुए हैं और उनके परिवारों के प्रति सहानुभूति करता है।[७]

संदर्भ-सूची :

१. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा पंजाह साला इतिहास, पृष्ठ ५५-५७.
२. उक्त, पृष्ठ ६९- ७०.
३. महाराजा नाभा का पहला नाम रिपुदमन सिंघ था। गद्दी से उतारे जाने के बाद देहरादून में नज़रबंदी के समय (सन् १९२७ में) बाबू तेजा सिंघ पंचखंड (भदौड़) के सहयोग से जब उनकी शादी हुई, तो नये सिरे से अमृत-पान कर महाराजा का नाम 'रिपुदमन सिंघ' के स्थान पर 'गुरचरन सिंघ रखा' गया।
४. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा पंजाह साला इतिहास, पृष्ठ ७३-७४
५. उक्त, पृष्ठ ७८
६. उक्त, पृष्ठ ८१
७. उक्त, पृष्ठ- ८३

दशमेश पिता की चरण-रज से पवित्र हुआ स्थान : जैतो

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

जैतो ज़िला फरीदकोट का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक नगर है। यह बठिंडा और कोटकपूरा नगर के निकट स्थित है। इस नगर को दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की चरण-रज से पवित्र होने का सौभाग्य प्राप्त है।

श्री अनंदपुर साहिब और चमकौर साहिब के युद्धों के बाद दशमेश पिता माछीवाड़ा से चलकर कटाणी, आलमगीर, जोधां, मोही, लम्मेजट्ट पुरा, रायकोट, चकर, तख़तूपुरा होते हुए दीना गांव पहुंचे, जहां गुरु जी ने 'ज़फरनामा' की रचना की। गुरु जी दीना गांव से कोटकपूरा आये और फिर वहां से जैतो पहुंचे।

जैतो शहर दो गुरुधामों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। ये गुरुधाम हैं गुरुद्वारा टिब्बी साहिब और गुरुद्वारा गंगसर साहिब।

गुरुद्वारा टिब्बी साहिब : गुरुद्वारा साहिब में बोर्ड के रूप में प्रदर्शित किए गए 'संक्षिप्त इतिहास' में दर्ज सूचना के अनुसार दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संवत् १७६२ बिक्रमी (सन् १७०५ ईसवी) के बैसाख माह में कोटकपूरा शहर से कूच किया और सोमवार १८ बैसाख के दिन जैतो पहुंचे। १९ बैसाख, दिन मंगलवार को पूर्णिमा भी थी और चंद्र ग्रहण भी था। गुरु जी ने पूर्णिमा का पर्व जैतो में ही मनाया। सतिगुरु जी ने गांव जैतो के बाहर एक ऊंचे टीले (टिब्बी) पर डेरा डाला और सिंघों को तीरंदाजी का अभ्यास कराया। शाम को रहरासि साहिब का पाठ किया और दीवान सजाया। दीवान की समाप्ति के बाद गुरु जी ने उस स्थान पर आकर विश्राम किया जहां आजकल गुरुद्वारा गंगसर साहिब सुशोभित है। उन दिनों मालवा क्षेत्र में पानी की बहुत किल्लत थी। गुरुद्वारा गंगसर साहिब वाले स्थान पर एक छोटी-सी छपड़ी (तालाब) थी, जिसमें पानी था तो सही, मगर बहुत ही कम था। गुरु जी पानी की आवश्यकता-पूर्ति के लिए ही गुरुद्वारा गंगसर साहिब वाले स्थान पर आये थे।

बाद में भाई राम सिंघ की प्रेरणा से भाई शेर सिंघ, भाई प्रताप सिंघ और भाई संत सिंघ ने टिब्बी साहिब में एक कुआँ खुदवाया। मंजी साहिब और सरब लोह का निशान साहिब भी तैयार करने की सेवा की गई।

इसके काफी समय बाद नाभा रियासत ने गुरुद्वारा साहिब के नाम आठ एकड़ जमीन लगवाई। इस गुरुधाम की सेवा बाबा जीवन

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— १४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

सिंघ और बाबा दलीप सिंघ द्वारा करवाई जाती रही है।

गुरुद्वारा साहिब की वर्तमान इमारत १९८० ई. में पूर्ण हुई थी। यहां प्रकाश-स्थान के अलावा बड़ा दीवान हाल भी निर्मित है।

गुरुद्वारा गंगसर साहिब पातशाही दसवीं : संवत् १७६२ बिक्रमी (सन् १७०५ ईसवी) में जब दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जल की खोज में यहां आये, तो यहां एक छोटी-सी छपड़ी थी। एक स्थानीय ब्राह्मण की इच्छा-पूर्ति हेतु इस क्षेत्र में जलपूर्ति का आश्वासन दिया। तब से इस स्थान को 'गंगसर' कहा जाने लगा। अब उस छपड़ी के स्थान पर यहां सुंदर सरोवर सुशोभित है।

इस गुरुधाम की इमारत नाभा के महाराजा हीरा सिंघ ने बनवाई थी। बाद में इसकी कार सेवा बाबा गुरमुख सिंघ ने करवाई।

जैतो शहर के ये गुरुधाम १९२१ से १९२५ ई. तक चली गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के प्रमुख केन्द्र बने रहे।

जैतो का मोर्चा : जैतो का मोर्चा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोर्चा है। इस मोर्चे ने सन् १९२४ के फरवरी महीने के अंतिम सप्ताह को सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अमर कर दिया। हुआ यूँ कि अंग्रेज सरकार ने महाराजा नाभा और महाराजा पटियाला के बीच चल रहे एक राजनीतिक विवाद में पक्षपात करते हुए महाराजा नाभा के विरुद्ध फैसला करवा कर उन्हें गद्दी छोड़ने पर विवश कर दिया। इससे सिक्ख समाज में आक्रोश की लहर दौड़ गई। ५ अगस्त, १९२३ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का एलान कर दिया। इस आंदोलन के अन्तर्गत पंजाब के सभी गुरुद्वारों में निरंतर श्री अखंड पाठ साहिब करने और दीवान सजाने का कार्य आरंभ हुआ। ९ सितंबर, १९२३ ई. को 'नाभा दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय भी किया गया।

आंदोलन हालांकि शांतिपूर्ण था, परन्तु इससे आ रही जागृति से अंग्रेज सरकार झल्ला उठी। सरकार ने १४ सितंबर, १९२३ ई. को गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो में पुलिस भेजी, जिसने भाई इंदर सिंघ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में से गिरफ़्तार कर लिया और श्री अखंड पाठ साहिब को खंडित कर दिया।

सिक्ख नेताओं ने आंदोलन को पहले से भी तीव्र करने का एलान करते हुए कहा कि जब तक अंग्रेजों के अफसर पश्चाताप नहीं करते तब तक श्री अखंड पाठ साहिब और दीवान निरंतर सजते रहेंगे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आंदोलन को और तेज़ करने का निर्णय लिया। १५ सितंबर, १९२३ ई. से २५ सिक्खों का एक जत्था रोज़ जैतो जाने लगा। पुलिस आंदोलनकारियों को पकड़ती और सैकड़ों मील दूर ले जाकर छोड़ देती, परंतु संघर्ष बढ़ता

ही चला गया।

९ फरवरी, १९२४ ई. को ५०० सिक्खों का शहीदी जत्था जैतो भेजने का फैसला किया गया। यह जत्था २१ फरवरी को गुरुद्वारा गंगसर साहिब पहुँचा। निहत्थे, शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे जत्थे पर गोली चला दी गई। १०० से अधिक सिक्ख शहीद हो गये और २०० से भी अधिक घायल हो गये।

इस घटना की पूरे देश में प्रतिक्रिया हुई। मदन मोहन मालवीय सहित अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने कड़े शब्दों में इसकी निंदा की। कलकत्ता में एक भारी जलसा आयोजित किया गया, जिसमें जैतो के मोर्चे का व्यापक समर्थन किया गया।

अंग्रेजों ने बलवंत सिंघ बलुआ कमेटी के माध्यम से सिक्खों को ही दोषी ठहराने का षड्यंत्र रचा, मगर सिक्खों के हौसले पस्त नहीं हुए। दूसरा जत्था २८ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अकाल तख्त साहिब से चला और ९ मार्च को जैतो पहुँचा। इस बार अंग्रेजों की गोली चलाने की हिम्मत नहीं हुई। ५०-५० के जत्थे को पाठ करने की आज्ञा दे दी, लेकिन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसे स्वीकार न किया।

जत्थों का जैतो जाना जारी रहा। तीसरा जत्था २२ मार्च को, चौथा २७ मार्च को, पाँचवाँ १५ अप्रैल को, छठा ९ मई को, सातवाँ १ जून की, आठवां २२ मई को, नौवां २५ जून को, दसवां और ग्यारहवां १३ जुलाई को, बारहवाँ १७ अगस्त को, तेरहवां १८ सितंबर को, चौदहवां १५ दिसंबर को, पंद्रहवां १ मार्च, १९२५ को, सोलहवां १७ अप्रैल को जैतो रवाना हुआ। कनाडा, शंघाई और हांगकांग के जत्थे भी इसमें शामिल हुए। २७ अप्रैल, १९२५ ई.को १०१ सिंघों का विशेष जत्था जैतो भेजा गया।

आख़िर अंग्रेज सरकार ने हार मान ली। गुरुद्वारा गंगसर साहिब, जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब करने पर लगाई पाबंदी हटा ली गई। २१ जुलाई, १९२५ ई. को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब की लड़ी शुरू हुई। ६ अगस्त, १९२५ ई. को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब सम्पूर्ण हुए और जैतो के मोर्चे का सफलतापूर्वक अंत हुआ।

गुरुद्वारा अंगीठा साहिब : गुरुद्वारा अंगीठा साहिब गुरुद्वारा गंगसर साहिब से आधा किलोमीटर दूर दक्षिणी सिरे पर स्थित है। यह वो स्थान है जहां २१ फरवरी, १९२४ ई. को शहीद हुए सिंघों का अंतिम संस्कार किया गया था। शहीद हुए सिंघों की याद में प्रत्येक वर्ष जैतो के गुरुद्वारा साहिबान में शहीदी जोड़ मेला बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जाता है।

जैतो : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में

*-स. बिकरमजीत सिंघ जीत**

पंजाब में स्थित जैतो, ज़िला फरीदकोट का एक कसबा है, जो कि बठिंडा फ़िरोज़पुर रेलवे लाईन पर बठिंडा से २५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

जैतो को संत जैतू ने बसाया था।[१] बाद में इस नगर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का चरण-स्पर्श प्राप्त हुआ, जिस कारण सिक्ख इतिहास में इसकी महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। जैतो की मंडी बहुत प्रसिद्ध है। दूर- दूर से लोग यहाँ पशु क्रय-विक्रय करने आते हैं, इसलिए इसे 'जैतो मंडी' नाम से भी जाना जाता है।

जनसंख्या तथा अन्य पक्ष से यदि जैतो नगर पर दृष्टिपात करें तो २०११ ई. की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या ३७,३७७ है। जैतो की औसतन साक्षरता दर ६२ प्रतिशत है, जिसमें स्त्रियों की साक्षरता दर ५६ प्रतिशत और पुरुषों की ६७ प्रतिशत है। इसका क्षेत्रफल अंदाज़न १३.०९ स्केयर कलोमीटर (५.०५ स्केयर मील) है। दूरसंचार कोड ०१६३५ और वाहन पंजीकरण संहिता पीबी-६२ है।

इस नगर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की याद में गुरुद्वारा गंगसर साहिब पातशाही दसवीं सुशोभित है, जिस कारण इस नगर को 'गंगसर जैतो' भी कहा जाता है। 'श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संवत् १७६२ बिक्रमी (१७०५ ई.) के बैसाख माह में कोटकपूरा से चल कर १८ बैसाख दिन सोमवार को जैतो पहुँचे। यहाँ आकर सतिगुरु जी ने एक टिब्बी (टीला) पर ठिकाना किया और सिंघों को तीरंदाज़ी का अभ्यास कराया। इस स्थान पर वर्तमान में गुरुद्वारा टिब्बी साहिब शोभित है। उस समय मालवा में पानी की बहुत किल्लत थी। यहाँ पर निकट ही एक छोटा-सा ताल (तालाब) था। गुरु साहिब शाम के दीवान की समाप्ति के पश्चात टिब्बी पर से यहाँ पर आ गए।

अगले दिन प्रातः काल एक वृद्ध महिला अपने पोते रामू को साथ लेकर गुरु साहिब के दर्शन करने आई तो रामू ने स्वाभाविक ही गुरु जी की कमान पकड़ ली। इस पर उसकी दादी नाराज होने लगी। सतिगुरु ने उस बूढ़ी दादी को समझाते हुए व खुश होकर कहा, ''माई ! तेरे इस पोते के हाथ कमान तब तक रहेगी, जब तक यह गुरु-घर की सेवा करता रहेगा। गुरु साहिब की बख्शिश से रामू की संतान अब तक ज़ैलदारी (सरदारी) करती आ रही है।''[२]

इस बाबत ज्ञानी गिआन सिंघ भी लिखते

* सहायक संपादक, गुरमति प्रकाश। फोन : ८७२७८-००३७२

हैं-- ''गुरु जी ढाब कंदे उतरे रामूं किआं दी वड्डी वडेरी माई ने अपने पोत्रे रामूं समेत सेवा कीती। उस बालक ने गुरु जी दी फूड़ी चुक लई। माई जी गुस्से होए। गुरु जी ने खुश हो वर (आशीर्वाद) दित्ता कि माई, तेरे पोत्रे हत्थ सदा फड़ी रहेगी। सो सच है, हुण तक जैलदारी उन्हां दे ही घर चली औंदी है।[३]

इसी स्थान पर उसी दिन घटी एक अन्य घटना के अनुसार लिखा मिलता है-- ''उसी दिन एक ब्राह्मण, अपनी मृत गाय का प्रायश्चित करने के लिए गंगा-स्नान हेतु हरिद्वार प्रस्थान करने लगा, तो उसके सगे-सम्बंधी उसे विदा करते समय विलाप करने लगे। उन दिनों यातायात के साधन न होने के कारण पैदल यात्रा करना अति कठिन था और मार्ग जंगली होने के कारण शेर, चीते आदि जानवरों का ख़तरा सदा बना रहता था, जिस कारण यात्रा पर गए यात्री का जिंदा लौट कर आना मुमकिन नहीं होता था। शोर सुन कर सतिगुरु जी ने उन्हें अपने पास बुलाया। सारी वार्ता सुन कर सतिगुरु जी ने उस ब्राह्मण से कहा कि परमात्मा सर्वव्यापक है। यदि सच्चे दिल से प्रायश्चित किया जाये, विनती की जाए, तो परमात्मा प्रत्येक की आवाज सुनता है। परमात्मा की कृपा से जहाँ पर उसके सेवक निवास करते हैं, उसी स्थान को तीर्थ जानो!' ब्राह्मण ने गुरु साहिब का वचन मान कर उस जोहड़ (तालाब)को गंगा जानकर उसमें स्नान किया तो उसे गंगा-स्नान जितना ही सुकून मिला। उसने सतिगुरु जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपकी कृपा द्वारा मुझे यहीं पर गंगा मिल गई है; मुझे शांति मिल गई है।''[४]

यहाँ यह बात भी करनी आवश्यक लगती है कि गुरमति में तीर्थ-स्नान करने वालों के लिए यह बात स्पष्ट की गई है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। वह कण-कण में विद्यमान है। परमात्मा की भक्ति करने वाले सच्चे सेवक- जन जहाँ आ जाते हैं, जहाँ अपने पांव धरते हैं वही तीर्थ-स्थान है-- *''अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि।।''* और *''गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ।।''* बन जाते हैं। ऐसे तीर्थ भी साधु-जन, महापुरुषों की चरण-धूलि चाहते हैं-- ''गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई॥''

गुरुद्वारा साहिब और सरोवर की कार सेवा : इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत महाराजा हीरा सिंघ नाभा ने बनवाई। इसके निकट एक किला भी था, जिसके अवशेष अब भी मौजूद हैं। तत्पश्चात् इस स्थान की कार सेवा बाबा गुरमुख सिंघ पटियाला वाले के सेवक बाबा दलीप सिंघ और संत बाबा जीवन सिंघ ने अपने हाथों में ली। उन्होंने सभी गुरुद्वारा साहिब की चारदीवारी करवा कर शानदार सरोवर भी तैयार करवाया। दरबार की संगमरमरयुक्त नई इमारत तैयार हो चुकी है। संगत दूर-दूर से आकर सेवा करती है। कुछ नवनिर्माण का कार्य अब भी जारी है। सारा प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर साहिब के अधीन चल रहा है। उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ

से भी इमारत के लिए कुछ आर्थिक मदद दी गई थी। इस स्थान को नाभा रियासत की तरफ से ७० घुमा ज़मीन वार्षिक जागीर मिली हुई है, जो आज तक मामले की माफी की शक्ल में मिलती है।''[५] मौजूदा समय में समूचा प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से नियुक्त मैनेजर के माध्यम से चलाया जाता है।

गुरुद्वारा टिब्बी साहिब : गुरबाणी का फरमान है-- ''जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे॥'' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सर्वप्रथम जिस टिब्बी पर विराजमान हुए थे, वहाँ गुरुद्वारा टिब्बी साहिब बन गया। ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार, ''जैतो टिब्बी साहिब-- एथे बैठ के तीर निशाने लाए राम सिंघ सेवादार दी प्रेरणा तों शेर सिंघ प्रताप सिंघ संत सिंघ आदि महाजनां ने खूही अते मँजी साहिब पक्का ते निशान साहिब सरब लोह दा तैयार कराया है। सेवादार झोली फेरके निर्वाह करदा है।''[६] ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार उसके काफ़ी लंबे समय के बाद रियासत नाभा की तरफ से केवल आठ घुमा ज़मीन इस गुरुद्वारा साहिब के नाम लगाई गई।''[७]

गुरुद्वारा अंगीठा साहिब : गुरुद्वारा गंगसर साहिब और गुरुद्वारा टिब्बी साहिब के अलावा बठिंडा रोड पर गुरुद्वारा अंगीठा साहिब सुशोभित है, जहाँ मोर्चे के समय शहीद हुए सिंघों-सिंघणियों का सामूहिक अंतिम संस्कार किया गया था।

एक अन्य गुरु-स्थान गुरुद्वारा श्री सिंघ सभा साहिब स्थानीय संगत के सहयोग से जैतो के बिशनन्दी बाज़ार में बनाया गया है। इस स्थान का प्रबंध भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास है।

गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो में प्रत्येक वर्ष मोर्चे में शहीद हुए सिंघों के परिवारों एवं संगत द्वारा मिल कर १०१ श्री अखंड पाठ साहिब की लड़ी १० जनवरी से शुरू की जाती है और २१ फरवरी को समाप्ति के भोग होते हैं तथा विशाल समारोह जोड़-मेले के रूप में आयोजित किया जाता है।

संदर्भ-सूची :

१. संक्षिप्त इतिहास गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पातशाही १०वीं, जैतो, प्रकाशक: मैनेजर गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो, मई २०२३
२. उपरोक्त।
३. गुरधाम संग्रह, ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ १५७, धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर, साहिब, प्रकाशक: केंद्रीय सिंघ सभा अकादमी, चंडीगढ़।
४. संक्षिप्त इतिहास गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पातशाही १०वीं, जैतो, पृष्ठ ४-५, प्रकाशक: मैनेजर, गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो, मई २०२३
५. उपरोक्त, पृष्ठ ५-६
६. गुरधाम संग्रह, ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ १५७, धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, प्रकाशक: केंद्रीय सिंघ सभा अकादमी, चंडीगढ़।
७. संक्षिप्त इतिहास गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पातशाही १०वीं, जैतो, पृष्ठ ८, प्रकाशक : मैनेजर, गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो, मई २०२३

सिक्खों की सहिष्णुता व कुर्बानी की उम्दा मिसाल : जैतो का मोर्चा

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

सभी सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब और गुरुद्वारा साहिबान अपनी जान से भी अधिक प्यारे हैं। इनके मान, सम्मान, मर्यादा और पवित्रता की रक्षा हेतु सिक्ख सदैव पहरेदारी करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर अपनी जान तक कुर्बान कर देते हैं। जिन-जिन दुष्टों व जालिमों ने जब-जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा गुरुद्वारा साहिबान के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाई है, इनकी मर्यादा एवं पवित्रता भंग की है, तब-तब सिक्खों ने उन्हें कड़ा सबक सिखाया है। सिक्ख प्रेम, सौहार्द, सद्भावना, भाईचारे में अटूट विश्वास रखते हैं और वे सभी धर्मों व समुदाओं का सम्मान करते हैं। उनकी श्रद्धा व आस्था के प्रकाश-स्तंभ एवं केंद्र गुरुद्वारा साहिबान का कोई अपमान करे, वे यह कतई सहन नहीं करते हैं।

सिक्ख पंथ के विद्वान व लेखक (दिवंगत) ज्ञानी भजन सिंघ लिखते हैं कि ''गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और अकाली लहर के समय कई मोर्चे लगे, जिनमें सिक्ख पंथ ने गुरुद्वारों की पवित्रता, सिक्खी मर्यादा तथा स्वाभिमान की खातिर अनेक कुर्बानियां दीं और शहीदों की सूची में वृद्धि की। अकाली लहर के वक्त ही जैतो में गुरुद्वारा गंगसर साहिब का मोर्चा शुरू हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सूचना के अनुसार इस मोर्चे में एक सौ से अधिक सिंघ-सिंघणियां शहीद हुए और हज़ारों ने जेल के कठोर व अकथनीय कष्ट सहन किए। गुरुद्वारा गंगसर साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब प्रारंभ करवाने हेतु गुरु के सिक्खों ने जो शहादत दी, उसने सारी कौम का भारत में ही नहीं, अपितु सारे संसार में गौरव बढ़ाया। इसके साथ ही देश की आज़ादी हेतु जारी संघर्ष को भी काफी सहायता मिली।''

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार नाभा रियासत के महाराजा रिपुदमन सिंघ ने सन् १९१२ में गद्दी पर बैठते ही कुछ ऐसे सराहनीय कार्य किए, जिनके कारण सिक्ख कौम में उनका सम्मान व प्रभाव बढ़ने लगा। महाराजा ने गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब के मोर्चे में सिक्ख कौम का साथ दिया। महाराजा रिपुदमन सिंघ की सिक्खों में बढ़ रही लोकप्रियता अंग्रेज सरकार को चुभने लगी।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

वह महाराजा को गद्दी पर से उतारने के लिए षड्यंत्र रचने लगी। उधर महाराजा पटियाला भूपेन्द्र सिंघ तथा महाराजा रिपुदमन सिंघ के बीच टकराव पैदा हो गया। अंग्रेजों ने महाराजा पटियाला के माध्यम से महाराजा नाभा के विरुद्ध कई वाद दायर करवा दिए। महाराजा नाभा को सिंहासन छोड़ने के लिए विवश कर दिया।

९ जुलाई, सन् १९२३ को महाराजा रिपुदमन सिंघ को सिंहासन पर से उतारकर रियासत का प्रबंध एक अंग्रेज (प्रबंधक) को सौंप दिया गया। महाराजा नाभा को कैद कर पहले देहरादून रखा गया, फिर तमिलनाडू भेज दिया गया।

इस घटना के बाद सिक्खों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी और वे संघर्ष के जोश से भर उठे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यह मामला अपने हाथों में लेना पड़ा। ९ सितंबर, १९२३ ई. को रोष दिवस (नाभा डे) मनाने का सिक्ख संगत ने निर्णय लिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अकाली दल ने अपील की कि महाराजा नाभा के समर्थन में नंगे पांव जुलूस निकाले जाएं। इस विशाल कार्यक्रम की तैयारी के लिए कई स्थानों पर दीवान सजाए गए। गुरुद्वारा गंगसर साहिब, जैतो में भी निरंतर दीवान सजाने का निर्णय लिया गया।

१४ सितंबर, १९२३ ई. को पुलिस ने गुरुद्वारा गंगसर साहिब पर कब्ज़ा कर लिया। उस समय वहां पर मौजूद एक सौ से अधिक सिंघों को गिरफ्तार किया गया। गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब जारी था। पुलिस पाठी सिंघ को घसीटकर बाहर ले गई और पाठ खंडित होने की अति दु:खद घटना घटित हो गई। इसके बाद सिक्खों ने जैतो में पक्का मोर्चा लगाने की घोषणा कर दी। इस तरह अंग्रेजों और सिक्खों के दरमियान सीधे टकराव का माहौल बन गया।

अंग्रेज सरकार सत्ता के गुमान में सिक्खों को दबाने अथवा कुचलने पर तुली हुई थी और गुरु के सिक्ख अपनी कुर्बानियों द्वारा अंग्रेज़ सरकार को झुकाने पर तुले हुए थे। बात तो महाराजा रिपुदमन सिंघ से नाभा रियासत की सत्ता छीनने एवं उन्हें कैद करने से शुरू हुई थी, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ खंडित होने पर इस आंदोलन (संघर्ष) ने नया रूप धारण कर लिया और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सत्याग्रही जत्थे भेजने शुरू कर दिए।

१५ सितंबर, १९२३ ई. को पच्चीस सिंघों का पहला जत्था भेजा गया। इसके बाद लगातार छ: माह तक २५-२५ सिंघों के जत्थे भेजे जाते रहे। अंग्रेज़ों के निर्देश पर पुलिस इन जत्थों में शामिल सिक्खों को पीटती तथा उन्हें

गिरफ्तार कर यातनाएं देती। फिर उन्हें दूर जंगलों में ले जाकर छोड़ दिया जाता। इस मोर्चे के समय सिक्खों ने जिस भावना, कुर्बानी, सहिष्णुता, शांति को प्रकट किया, उसकी उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलती।

मोर्चे की अवधि लंबी होती देखकर ५००-५०० सिंघों के जत्थे भेजने का कार्यक्रम बनाया गया। ९ फरवरी, १९२४ ई. को पाँच सौ सिंघों का प्रथम शहीदी जत्था श्री अकाल तख्त साहिब श्री अमृतसर साहिब से रवाना हुआ। इस जत्थे के जत्थेदार (प्रमुख) स. ऊधम सिंघ गोहलवड़ नियुक्त किए गए। उन्हें रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया गया, अत: जत्थे की आगवानी भाई सुलतान सिंघ को सौंप दी गई। यह शहीदी जत्था माझा व मालवा में प्रचार करता हुआ २० फरवरी, १९२४ ई. को फरीदकोट रियासत के गांव बरगाड़ी में पहुंच गया। यहां से दूसरे दिन २१ फरवरी को जत्था गुरुद्वारा गंगसर साहिब, जैतो की ओर चल पड़ा। हज़ारों लोग इस जत्थे के साथ चल पड़े।

जैतो में पुलिस व सेना का भारी जमावड़ा था। जत्थे को रोकने के लिए तोपों एवं मशीनगनों की तैनाती भी की गई थी। जब पांच सौ सिंघों का यह शहीदी जत्था गुरुद्वारा गंगसर साहिब के निकट पहुंचा, तब उन पर मशीनगनों द्वारा गोलियों की बौछार की जाने लगी। 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप करते हुए निडर व निर्भीक सिंघ आगे बढ़ते रहे। गोलियों की बौछार से एक भी सिंघ भयभीत न हुआ और किसी ने भी डरकर या घबराकर पीछे हटने की कोशिश न की। कई सिंघों के सीने छलनी हो गए तथा उनके लहू से जमीन पर लामिसाल शहीदियों का इतिहास अंकित होने लगा। कई सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए।

जत्थे में जिंदा बचे सिंघों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जत्थे के साथ चिकित्सक (वैद्य) भी थे, परंतु पुलिस ने किसी भी घायल का उपचार न करने दिया। पुलिस ने शहीद हुए सिंघों के शव भी संगत को उठाने न दिए। उस त्रासदीपूर्ण व दर्दनाक २१ फरवरी की रात को ही बहुत-से शहीद सिंघों के शव एक विशेष रेलगाड़ी में लाद कर दरिया सतलुज के तट पर ले जाए गए और बहते पानी में बहा दिए गए। २२ फरवरी को २२ शहीद सिंघों के शव अंतिम संस्कार हेतु सिक्खों को सौंप दिए गए। सरकार ने झूठी घोषणा कर दी कि केवल २२ सिक्खों की जान गई है और ३३ घायल हुए हैं तथा लगभग ४५० सिक्खों को गिरफ्तार किया गया है।

जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जांच-पड़ताल की, तब पता चला कि वास्तव में १०० से अधिक सिंघ शहीद हुए हैं तथा

घायल हुए सिंघों की संख्या लगभग २०० है।

गुरुद्वारा गंगसर साहिब के मोर्चे से संबंधित सिंघ, जो कि जत्थों के संग आते हुए किसी आकस्मिक रोग या हादसे के कारण और जेलों में जालिम सरकार के अत्याचारों के कारण शहीद हुए थे, उनकी गिनती लगभग १५० थी। अनेक गिरफ्तार सिंघों को नाभा के कारावास में रखा गया और जंबूरों से उनका मांस नोच-नोचकर उन्हें घोर यातनाएं दी गईं।

जैतो के मोर्चे के खूनी व शहीदी साके के बाद अत्याचार की आंधी को रोकने के लिए सारी सिक्ख कौम उठ खड़ी हुई। श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर साहिब से २८ फरवरी, १९२४ ई. को दूसरा जत्था रवाना हुआ और १४ मार्च को जैतो पहुंच गया। इस जत्थे पर पुलिस गोलियां चलाने का साहस न जुटा सकी। अंग्रेज सरकार यह देखकर अति अचंभित रह गई व घबरा उठी थी कि पहले जत्थे पर गोलियां बरसाने पर ५०० सिंघों में से एक भी पीछे नहीं हटा था। यहां तक कि एक सिक्ख महिला की गोद में उठाया हुआ एक मासूम बालक गोली लगने से शहीद हो गया था। उस महिला ने बालक की मृतक देह भूमि पर रख दी। फिर स्वयं जत्थे के संग आगे चल पड़ी। कुछ कदम आगे जाने पर उसे भी गोली लगी और वह भी शहीद हो गई। धन्य था उसका धैर्य, कुर्बानी और जज़्बा। सारी स्थिति के मद्देनज़र पुलिस ने दूसरे जत्थे को घेर कर गिरफ्तार कर लिया। तदुपरांत लगातार पांच-पांच सौ सिंघों के जत्थे आते रहे। बंगाल (कलकत्ता) से भी एक जत्था आया। कनाडा से ११ सिंघों का जत्था पहुंचा। इसी तरह चीन के शहर शिंघाई और हांगकांग से भी जत्थे जैतो पहुंचे। अंत में अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा। गुरुद्वारा साहिब पर से पुलिस का पहरा हटा लिया गया और सिंघों ने वहां पर पुनः श्री अखंड पाठ साहिब शुरू कर दिया। २६ जुलाई, १९२५ ई. को जैतो का मोर्चा फतह हुआ। बेशक इस मोर्चे के बावजूद महाराजा रिपुदमन सिंघ की पुनः ताजपोशी का मसला हल न हुआ, परंतु इस महान् व लासानी मोर्चो ने फिरंगी सरकार की प्रतिष्ठा पर गहरा आघात किया।

उल्लेखनीय है कि जैतो का यह मोर्चा दो वर्ष लगातार चलता रहा और ५००-५०० सिंघों के जत्थे जाते रहे थे।

दुरजनु दूजा भाउ है ...

*-डॉ. परमजीत कौर**

प्रभु के बिना जितना भी प्यार है, माया का मोह है। वह सब 'दूजा भाउ' है। श्री गुरु रामदास जी बताते हैं कि जितने भी बादशाह, सरदार, चौधरी जगत में दिखायी देते हैं, सब नाशवान हैं, सबको झूठा तथा 'दूजा भाउ' समझो! यह सब माया का प्यार है। यदि परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी से माया आदि की उम्मीद करोगे, वह किसी काम नहीं आयेगी। माया वाली आशा प्रभु के बिना दूसरा प्यार है। यह सब मिथ्या प्रेम है, जो नश्वर है :

— जे किछु आस अवर करहि परमित्री
मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि आई।।
इह आस परमित्री भाउ दूजा है
खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई।।
मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की
जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई।।
(पन्ना ८५९)

— जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु।।
(पन्ना ८६१)

जो मनुष्य प्रभु के बिना अन्य के प्रेम में मग्न हो जाता है वह दुखी रहता है। परमात्मा उसे दूर प्रतीत होता है :

— दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार।।
(पन्ना ८५)

— इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही
दूजै भरमि भुलाइ।। *(पन्ना ४२८)*

जिस कारण से भी मनुष्य को परमात्मा भूल जाता है या जो कुछ भी परमात्मा से अधिक प्रिय लगता है, वह सब माया है :

एह माइआ जितु हरि विसरै
मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ।। *(पन्ना ९२१)*

परमात्मा को छोड़कर जितना भी प्रेम है वह परमात्मा में ध्यान नहीं लगाने देता :

दूजा भाउ न देई लिव लागणि
जिनि हरि के चरण विसारे।। *(पन्ना ७९६)*

व्रत रखने, कर्मकाण्ड आदि का प्रत्येक प्रेम, देव-पूजा आदि आत्मिक जीवन की सूझ के बिना यह सारा उद्यम परमात्मा को भूलकर माया का प्रेम पैदा करने वाला 'दूजा भाउ' ही है :

वरतु नेमु निताप्रति पूजा।।
बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा।। *(पन्ना ८४१)*

गुरु साहिब ने 'दूजा भाउ' अर्थात् दूसरे प्रेम को दुर्जन कहा है :

दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमैं रोगु।।
(पन्ना १०९५)

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१; फोन : ९८१२३-५८१८६*

दुर्जन का अर्थ है-- दुष्ट, मंद कर्मी, सबसे बड़ा शत्रु, जो कभी हितकारी नहीं होता, सदा दूसरों की बुराई के बारे में सोचता है, दूसरों के अकल्याण में सहायक होता है। श्री गुरु अरजन देव जी के मत में जो मनुष्य प्रभु को भूल जाता है वह दुर्जन है :

— हरि छोडनि से दुरजना
पड़हि दोजक कै सूलि।। *(पन्ना ३२२)*
— साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि।।
(पन्ना ९५७)

दुर्जन से प्रेम करना दुर्मति का संकेत है :

दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु।।
ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी।।
पिरु छैलु छबीला छडि गवाइओ
दुरमति करमि विहूणी।। *(पन्ना ९५९)*

दुर्जन का संग पहले सुखदायी तथा प्रिय लगता है, बाद में जीवन नष्ट कर देता है। जैसे सर्प चाहे मणि के साथ विभूषित होकर भी डंक मारता ही है, वैसे ही दुर्जन चाहे जितना भी पढ़ा-लिखा विद्वान हो, वह घातक ही होता है। दुर्जन का संग जीवन को प्रभावित करता है, गलत जीवन-राह पर ले जाता है। सज्जन का संग जीवन को संवार देता है। परमात्मा के बिना जितना भी प्रेम है, माया का मोह है, ऊपर से सुखदायी लगता हुआ भी दुखों का मूल है, अकल्याण का द्वार है :

— दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ।।
बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ।।
(पन्ना ३६२)
— जगतु अगिआनी अंधु है
दूजै भाइ करम कमाइ।।
दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ।।
(पन्ना ५९३)

माया-मोह में लिप्त मनमुख अहंकारग्रस्त तथा दुराचारी बन जाते हैं :

हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ।।
जो मोहि दूजै चितु लाइदे
तिना विआपि रही लपटाइ।। *(पन्ना ५१३)*
— हम नीच मैले अति अभिमानी
दूजै भाइ विकार।। *(पन्ना ४२७)*

श्री गुरु रामदास जी विस्तार के साथ समझाते हैं कि मनमुख प्रभु के बिना दूसरे प्रेम में रत रहने के कारण सदा दुखी रहते हैं, दिन-रात हाय-हाय करते रहते हैं, क्रोधी हो जाते हैं। उनकी सारी आयु मेरी माया, मेरी माया करते हुए बीत जाती है, दातार प्रभु को कभी याद नहीं करते तथा अन्त काल में पश्चाताप करते हैं :

दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ।।
हाइ हाइ करे दिनु राति
माइआ दुखि मोहिआ जीउ।।
माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ
मेरी मेरी करत विहावए।।
जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही
अंति गइआ पछुतावए।।
बिनु नावै को साथि न चालै
पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ।।
दूजै भाइ दुखु होइ
मनमुखि जमि जोहिआ जीउ।। *(पन्ना ६९०)*

'दूजा भाउ' मनुष्य को मनमुख बनाकर दुर्मति

के अधीन कर देता है, द्वैत का प्रेम पैदा करके भ्रम में डाल देता है। दुर्मतिग्रस्त मनुष्य माया के प्रेम में फंसकर जीवन के कल्याणकारी मार्ग से भटक जाता है, कभी नाम नहीं जपता, प्रभु का गुण-कीर्तन नहीं करता :

— दुरमति दूजा भाउ है
वैरि विरोधु करोध कुलेखै। (वार ३१:६)
— दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि
माइआ मोह पिआर ।। (पन्ना ८५२)
— मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै।।
दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै।।
(पन्ना ९५५)

वास्तव में परमात्मा को छोड़कर किसी अन्य आश्रय की आशा ऐसी दुर्मति है जिसमें फंसी हुई जीव-स्त्री अंधी तथा बहरी हो जाती है। न वह प्रभु की महानता को देखकर अनुभव कर सकती है, न कानों से परमात्मा का गुण-कीर्तन सुन सकती है। उसका शरीर काम, क्रोध, अहंकार में क्षीण होता रहता है। प्रभु-पति उसके हृदय-घर में रहता है, मगर वह मूर्ख जीव-स्त्री उसको पहचान नहीं सकती, फोकट कर्मों तथा मढ़ी-मसाणों के चक्कर में भटकती रहती है :

— दूजी दुरमति अंनी बोली।।
काम क्रोध की कची चोली।।
घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि
बिनु पिर नीद न पाई हे।। (पन्ना १०२२)
— मूलु न बूझहि साचि न रीझहि
दूजै भरमि भुलाई हे।। (पन्ना १०२४)
— तीनि भवन महि एका माइआ।।
मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ।।
बहु करम कमावै दुखु सबाइआ।।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ।। (पन्ना ४२४)

माया के साथ प्रेम होने के कारण अंदर एकत्र हुई विकारों की मैल परमात्मा पर पूर्ण भरोसा करने में बाधक बनती है। नाम-प्राप्ति के रास्ते में 'दूजा भाउ' सबसे बड़ी रुकावट है। ऐसा मनुष्य तीर्थ-यात्रा आदि करता है, धर्म-ग्रंथ भी पढ़ता है। शारीरिक कर्मों पर गर्व महसूस करने लगता है तथा सारी जिंदगी त्रिगुणी माया के बंधन में फंसा रहता है :

— इहु मनु मैला इकु न धिआए।।
अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए।।
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी
होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ।। (पन्ना ११६)
— दूजै भाइ पड़ै नही बूझै।।
त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै।।
त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी
गुर सबदी मुकति करावणिआ।। (पन्ना १२७)

इस प्रकार किया गया जप-तप भी व्यर्थ हो जाता है :

— किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा।।
जा कै रिदै भाउ है दूजा।। (पन्ना ३२४)

ऐसे जीव अपने आत्मिक जीवन को तबाह कर अंत काल को खराब कर लेते हैं :

— मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि।।
दूजै भाइ आतम संघारहि।। (पन्ना ३६२)
— मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए।।
नामु न लेवै मरै बिखु खाए।।

अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु
सेवा जनमु गवावणिआ।। *(पन्ना ११९)*

प्रभु के अतिरिक्त अन्य आश्रय की इच्छा स्वार्थी बना देती है, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। आज की जिंदगी 'दुरजनु दूजा भाउ' से पूरी तरह से प्रभावित हो गयी है। गुरमति से दूर दुर्मति की तरफ जा रहा गुरु का सिक्ख 'बिपरन की रीति' के चक्रव्यूह में फंस गया है, धड़ेबाजी का शिकार हो गया है। अपने आप को श्रेष्ठ समझता हुआ दूसरों के दोष ढूंढता रहता है। श्री गुरु रामदास जी इस अवस्था की ओर संकेत कर रहे हैं :

मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै।।
पराइआ छिद्रु अटकलै
आपणा अहंकारु वधावै।। *(पन्ना ३६६)*

अंत में पश्चाताप ही इसका फल है :

दूजै भाइ लगे पछुताणे।।
जम दरि बाधे आवण जाणे।। *(पन्ना ८३९)*

जब तक अंदर लोभ है, तब तक दुख है, 'दूजा भाउ' है, भटकना है :

अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ।।
(पन्ना ९५०)

मन की मति त्याग कर गुरु की शरण में आने से जीवन में फैला हुआ अज्ञान रूपी अन्धकार दूर किया जा सकता है। सतिगुरु जी सदा दयालु हैं, शरण में आए हुए के अवगुण 'शबद' द्वारा जला देते हैं, माया का प्रेम दूर कर देते हैं :

— सतिगुरु सदा दइआलु है
अवगुण सबदि जलाए।।
अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए
सचे ही सचि राती।। *(पन्ना ५८३)*
— हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ।।
पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ।।
(पन्ना ६४३)
— इतु मारगि चले भाईअड़े
गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ।।
तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ।।
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ।। *(पन्ना ७६३)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जिनके अंदर माया का मोह है, 'दूजा भाउ' तथा दुर्मति है, उनको संसार के सुख गलत राह पर ले जाते हैं। गुरमति के अनुसार अपने जीवन को बनाने वाला मनुष्य 'दूजा भाउ' भुला कर एक परमात्मा के डर, अदब तथा प्रेम में रहता हुआ परमात्मा की कृपा का पात्र बन जाता है।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारी समिति की बैठक में लिए गए कई अहम फ़ैसले

श्री अमृतसर साहिब : ५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी की अध्यक्षता में हुई कार्यकारी समिति की बैठक में गुरुद्वारा साहिबान में सिरोपायो देने के प्रचलन को बंद करते हुए इससे होने वाली वित्तीय बचत को कौम की नौजवानी के अकादमिक विकास के लिए इस्तेमाल करने का निर्णय लिया गया है। इस निर्णय के अंतर्गत सिरोपायो देने के आम इस्तेमाल पर पाबंदी लगाते हुए केवल धार्मिक शख़्सियतों, नगर कीर्तनों के दौरान पाँच प्यारों, रागी सिंघों और धर्म-प्रचारकों तक ही सीमित कर दिया गया है। इसके साथ ही कई अन्य अहम फ़ैसलों को प्रवानगी दी गई।

कार्यकारी समिति की बैठक के बाद एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि सिरोपायो के इस्तेमाल के प्रति सैद्धांतिक फ़ैसले के अलावा गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा दीप सिंघ जी श्री अमृतसर साहिब में गुरबाणी-प्रसारण को अपने वेब चैनल (यूट्यूब, फेसबुक आदि) पर प्रसारित करने को भी प्रवानगी दी गई। उन्होंने बताया कि गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा दीप सिंघ जी के साथ संगत की भारी श्रद्धा जुड़ी हुई है। यहाँ अपना वेब चैनल स्थापित करने से नियमित रूप से संगत तक सीधा गुरबाणी प्रसारण निरंतर पहुंच सकेगा। उन्होंने यह भी बताया कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में आधुनिक तकनीक का साउंड सिस्टम भी लगाया जायेगा। एडवोकेट धामी ने बताया कि कार्यकारी समिति सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर १९८४ ई. में किये फ़ौजी हमले का बदला लेने वाले शहीद भाई बेअंत सिंघ की पुत्र-वधू बीबी संदीप कौर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में नौकरी देने का भी निर्णय लिया गया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने आगे बताया कि बीते समय में सुलतानपुर लोधी में गुरुद्वारा अकाल बुंगा छावनी निहंग सिंघां पर पुलिस द्वारा

ताबड़तोड़ गोलियाँ चलाने और जूतों सहित गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल होकर मर्यादा की उल्लंघना किए जाने की जाँच के लिए गठित की गई समिति ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है, जिसे कार्यकारी समिति ने जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के पास भेज दिया है। उन्होंने रिपोर्ट के संक्षिप्त विवरण देते हुए कहा कि पुलिस द्वारा गुरुद्वारा साहिब पर एक हज़ार से अधिक गोलियाँ दागे जाने की बात सामने आई है। उन्होंने बताया कि जाँच समिति ने विभिन्न लोगों के बयान दर्ज किये हैं, जिनमें निहंग सिंघ जत्थेबंदियों के प्रमुख भी शामिल हैं, परंतु सरकार के अधिकारी बयान देने से इन्कारी हैं। डिप्टी कमिशनर ने जाँच समिति को बयान देने से स्पष्ट मना किया है, जबकि एसएसपी की तरफ से भी ऐसा ही प्रतिक्रम मिला है। उन्होंने कहा कि फ़ैसले के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार को जाँच-रिपोर्ट भेज दी गई है।

भाई बलवंत सिंघ राजोआणा तथा अन्य बंदी सिंघों के मामले में गठित पाँच-सदस्यीय कमेटी की कार्यवाही के बारे में बात करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री से मुलाकात के लिए समय माँगा गया था, परंतु उन्होंने गृह मंत्री के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए कहा है, जिसे देखते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के पास की गई अपील के मद्देनज़र उन्होंने ३१ दिसंबर से समय बढ़ा कर २७ जनवरी तक कर दिया है। उन्होंने कहा कि पाँच-सदस्यीय कमेटी संजीदगी के साथ कार्यशील है और आशा है कि जल्द ही केंद्र सरकार के साथ बातचीत होगी।

कार्यकारी समिति की बैठक में तख़्त श्री दमदमा साहिब के पूर्व जत्थेदार और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सदस्य ज्ञानी बलवंत सिंघ नंदगढ़ के अकाल प्रस्थान पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए शोक-प्रस्ताव पारित किया गया।

बैठक में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. हरभजन सिंघ मसाणा, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़श सिंघ खालसा, महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, कार्यकारी समिति के सदस्य स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), स. इंदरमोहन सिंघ लखमीरवाला, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, बीबी मलकीत कौर कमालपुर, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, बीबी जसपाल कौर, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक

कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, अपर सचिव स. सुखमिंदर सिंघ, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. गुरदिआल सिंघ, स. गुरनाम सिंघ, स. बलविंदर सिंघ खैराबाद, स. शाहबाज सिंघ, एडवोकेट अमनबीर सिंघ सिआली आदि उपस्थित थे।

एक्सक्लूसिव वर्ल्ड रिकॉर्ड्स संस्था ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के प्रति भेंट किया सम्मान-पत्र

श्री अमृतसर साहिब : १० जनवरी : एक्सक्लूसिव वर्ल्ड रिकॉर्ड्स नामक संस्था द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब को दुनिया के सबसे अधिक श्रद्धालुओं की आमद वाले पवित्र स्थान के रूप में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सम्मान-पत्र भेंट किया गया। संस्था के प्रमुख डॉ. पंकज खटवानी और श्री दीपक थावानी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में पहुंच कर यह सम्मान-पत्र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अपर सचिव स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, उप सचिव स. जसविंदर सिंघ जस्सी और श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा को सौंपा। इस अवसर पर बातचीत करते हुए डॉ. पंकज खटवानी ने कहा कि उनकी संस्था द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के प्रति सम्मान-पत्र भेंट कर श्रद्धा प्रकट की गई है। उन्होंने कहा कि यह महान स्थान पूरी दुनिया के श्रद्धालुओं के लिए अति श्रद्धा का प्रतीक है और लाखों की संख्या में संगत की आमद के बावजूद प्रबंधकों की तरफ से बेहतरीन सेवाएं प्रदान की जाती हैं। श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा ने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की महानता अति विशाल है और प्रत्येक श्रद्धालु यहाँ नत्मस्तक होकर आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त करता है। एक्सक्लूसिव वर्ल्ड रिकार्ड्स नामक संस्था द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में श्रद्धा प्रकट करना भी इस पवित्र स्थान के प्रति समर्पण का अंग है। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता भी उपस्थित थे।

बीबी बलबीर कौर
गोद में उठाए अपने बच्चे
की गोली लगने से
शहादत होने के पश्चात्
बच्चे को धरती पर रख
कर आगे बढ़ती हुई

नाभा की खूनी
कारागार में सिंघों
पर ज़ुल्म ढाए
जाने का दृश्य

जैतो के मोर्चे
का हृदयवेधी
दृश्य

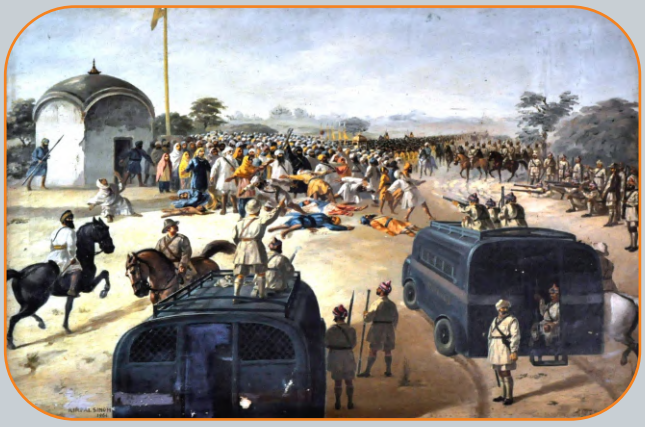

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

February 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पा. दसवीं, जैतो (ज़िला फरीदकोट)

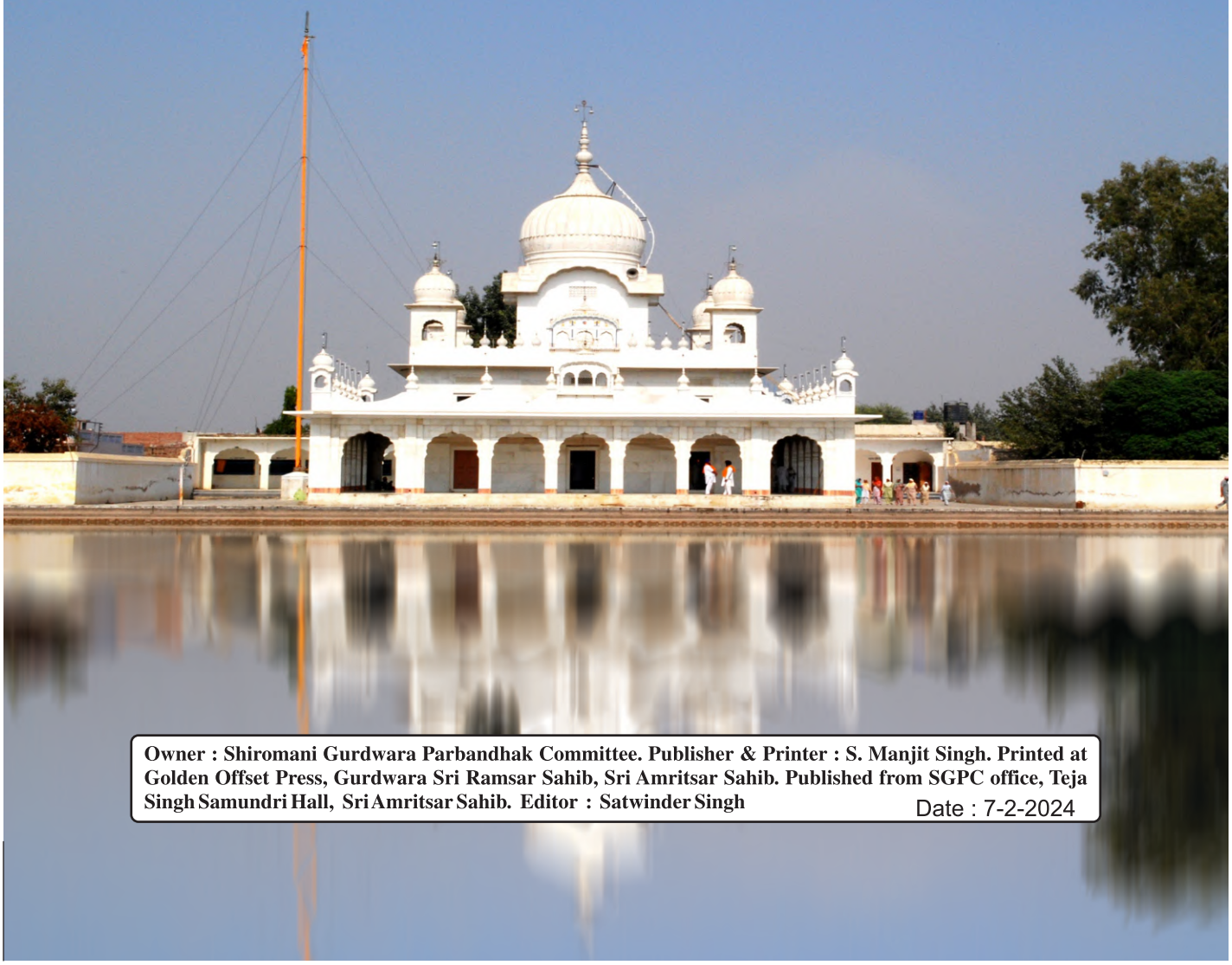

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-2-2024